तृतीय अध्याय

''भीष्म साहनी के नाटकों में सामाजिक चेतना की मीमांसा ''

तृतीय अध्याय

"भीष्म साहनी के नाटकों में सामाजिक चेतना की मीमांसा"

भीष्म साहनी के नाटकों में प्राप्त सामाजिक चेतना की मीमांसा करने से पूर्व हमें यह जानना अनिवार्य है कि समाज और 'सामाजिक ' से तात्पर्य क्या है ? ' चेतना ' से कौन–सा अभिप्राय व्यक्त किया जाता है ? और 'मीमांसा ' से क्या अर्थबोध होता है ? हमारे अर्थबोध में सुगमता और स्पष्टता आने के लिए प्रामाणिक शब्दकोशों तथा समाजशस्त्र ,दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान के अध्येताओं की दृष्टि से ' समाज,' 'सामाजिक ' ,'चेतना ' और 'मीमांसा ' का अर्थ आगे दिया जा रहा है ––

3.1 'समाज' का अर्थ––

अनेक शब्दकोशों में प्राप्त 'समाज' के अर्थ में साम्य पाया जाता है ।समाज का अर्थ 'नालन्दा विशाल शब्दसागर ' में इस प्रकार दिया है-" समाज – (संज्ञा पु.) (सं) (1) समूह या गिरोह ।(2) एक स्थान पर रहनेवाला अथवा एक ही प्रकार का कार्य करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समुदाय ।(3) किसी विशिष्ट उद्‌देश्य से स्थापित की हुई सभा । सोसाइटी ।"[1] 'भाषा–शब्द–कोष' में 'समाज ' का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है–" समाज–(संज्ञा ,पु.सं.) समूह ,सभा, समिति,दल, वृंद,समुदाय , संस्था, एक स्थान निवासी तथा समान विचाराचारवाले लोगों का समूह, किसी विशेष उद्‌देश्य या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा, आर्य समाज । कोऊ आज राज–समाज में बल संभु को धनु कर्षि है ।(राम.)"[2] 'आधुनिक हिन्दी शब्द कोश में ' समाज ' का अर्थ इस प्रकार दिया है-"समाज – (1) संघ, संघात, समष्टि, सभा, परिषद, गोष्ठी ।(2) मानव-समूह, जन–समुदाय , जन–समूह, मंड़ली,किसी भूखण्ड़ में रहनेवाली जनता, जन–समुच्चय,लोक–जन।(3) प्राचीन भारत में सार्वजनिक सभा,उत्सव, समज्या ।"[3] शब्दकोशों में

---

1 सं. श्री नवलजी – नालन्दा विशाल शब्दसागर,पृष्ठ–1407 ।

2 सं. डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल,भाषा-शब्द–कोष – पृष्ठ–1522 ।

3 सं. डॉ. गोविन्द चातक – आधुनिक हिन्दी शब्द–कोश,पृष्ठ–605 ।

प्राप्त 'समाज' के अर्थ पर विचार करते हुए 'समाज' का अर्थ इस प्रकार दिया जा सकता है कि समाज याने एक स्थान के निवासी या किसी भूखण्ड में रहनेवाले या समान विचाराचारवाले लोगों का समुदाय या समूह अथवा एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगों का वर्ग या समूह ।

3.2. "समाज" की परिभाषा--

'समाज' की निश्चित परिभाषा के बारे में समाजशास्त्रियों में मतभिन्नता पायी जाती है । मॅक आयव्हर और पेज ने अपने ग्रंथ ' सोसाइटी : ॲन इन्ट्राक्डटरी ॲनलिसिस ' में 'समाज' की परिभाषा इस प्रकार दी है :--

" Society is a system of usuages and procedures, of authority and mutual aid, of many groupings and divisions of controlas of human behaviour and all liberites. This ever changing, complex system we call society. It is the web of social relationships. And it is always changing"[1]

(समाज यह एक पद्धति है जिसमें रूढ़ि और अधिकारों की कार्य पद्धति है,अर्थ के आधार पर हुए अनेक वर्ग तथा भागों के परस्पर सहकार्य और उनमें स्थित मानवी व्यवहार और स्वतंत्रता का नियंत्रण होता है । यह एक सामाजिक संबंधों का जाल है और जो हमेशा बदलता रहता है ।) मॉरिन्स गिन्सबर्ग ने अपने 'सोशॉलॉजी' ग्रंथ में समाज की परिभाषा इस प्रकार दी हैं -

A society is collection of individuals united by certa _in relations of modes of behaviours which mark them off from others who do not enter into these relations or who differ from them in behaviour"[2]

---

1 मॅक आयव्हर और पेज -सोयाइटी : ॲन इन्ट्राक्डटरी ॲनलिसिस, पृष्ठ- 5 ।

2 मॉरिस गिन्सबर्ग - सोशॉलॉजी, पृष्ठ -40 ।

('समाज ' से तात्पर्य है –विशिष्ट संबंध या समान रहन–सहन पद्धति के कारण एकत्रित आए हुए वे शक्स जो औरों से अलग लगते हैं । कोई और शक्स इन शक्सों के संबंधों में प्रवेश नहीं कर सकता या फिर उनका वर्तन पूर्णतः भिन्न रहता है ।) डेव्हीड ड्रेसलर ने अपने ग्रंथ ' सोशॉलॉजी : द स्टडी ऑफ हयूमन इन्ट्राक्शन ' में ' समाज की परिभाषा इस प्रकार दी है :--

A society consists of all the people who share a distinct and continuing way of life (that is a culture) and think of thermselves as one united people.... Human societies are aslo systems of social relationships"[1]

(समाज के अंतर्गत वे सभी लोग आते हैं जो एक विशिष्ट और सतत क्रियमान जीवन पद्धति को अपनाते हैं ।(यह जीवन पद्धति ही संस्कृति है ।) और जो स्वयं को हम सब एक है ऐसा मानते हैं।... मानवी समाज सामाजिक संबंधों की भी पद्धति है ।

उपर्युक्त परिभाषाओं से ' समाज ' के बारे में यह ज्ञात होता कि समाज में विशिष्ट भूभाग या किसी भूखण्ड़ में रहनेवाले लोग समान संस्कृति का पालनकरते हैं । उनमें 'हम सब एक है 'यह भावना विद्यमान होती है । अर्थ के कारण इन लोगों में भेद पाये जाते हैं । इन लोगों में आपसी व्यवहार, स्वतंत्रता और नियंत्रण के कुछ नियम होते हैं । समाज में स्थित व्यक्तियों को इन नियमों का पालनकरना अनिवार्य होता है । समाज में स्थित व्यक्तियों में अनेक सामाजिक संबंध होते हैं जो नित्य परिवर्तनशील होते हैं । इसलिए समाज को सामाजिक संबंधों का जाल कहा जाता है ।समाज में एकत्रित आए हुए व्यक्तियों के संबंधों में कोई अन्य व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकता ।

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात ' समाज ' की इस प्रकार परिभाषा की जा सकती है – विशिष्ट भूभाग या किसी भूखण्ड़ में रहनेवाले व्यक्ति एक समान संस्कृति का पालनकरते हुए आपसी व्यवहार, सहकार्य, स्वतंत्रता और नियंत्रण के आधार पर करते हैं । इसमें अर्थ के आधार पर भेद पाये जाते हैं । इसमें परिवर्तनशील सामाजिक संबंधों का जाल विद्यमान होता है । समाज में एकत्रित आए हुए व्यक्तियों कं संबंधों में कोई अन्य व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकता ।

---

1 डेव्हीड ड्रेसलर – सोशॉलॉजी : द स्टडी ऑफ हयूमन इन्ट्राक्शन, पृष्ठ – 46 ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
BARR. ... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

3.3. **'समाज ' का स्वरूप--**

'समाज ' से तात्पर्य है कि दो से अधिक व्यक्ति विशिष्ट भू-भाग में समान संस्कृति या जीवन पद्धति के कारण एकत्रित रहते हैं और उनमें आपसी व्यवहार तथा स्वतंत्रता का नियंत्रण होता है। समाज में रहनेवाले व्यक्तियों के बीच सामाजिक संबंधों का जाल व्यापक ओर गहरा होता है।जैसे - माँ-बेटा, बाप-बेटा, माँ-बेटी, भाई-भाई , बहन-भाई, गुरू-शिष्य , पति-पत्नी , प्रेमी-प्रेमिका ग्राहक - दुकानदार आदि । इन्हीं विभिन्न संबंधों को विभिन्न नाम देकर विभिन्न पद्धति के साथ आपसी व्यवहार किया जाता है । समाज में रहने के लिए व्यक्ति विशिष्ट नियम और संस्कृति का पालन करके स्वयं को सुरक्षित और सुखी रखना पसंद करता है । सामाजिक नियमों को तोड़नेवाले को समाज दुवारा सजा भी दी जाती है । समय के साथ इनसामाजिक संबंधों और नियमों में परिवर्तन होता रहता है।

3.4. **'सामाजिक ' का अर्थ --**

अनेक शब्दकोशों के ' सामाजिक ' शब्द के अर्थ में साधर्म्य पाया जाता है । ' नालन्दा विशाल शब्दसागर ' में ' सामाजिक ' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है-' सामाजिक-(वि.)(सं)सारे समाज से संबंध रखनेवाला । समाज का । सोशल । (संज्ञा पु.) (सं.) काव्य, नाटक, आदि का श्रोता या दर्शक । सहृदय।'[1] इसी अर्थ से साधर्म्य दर्शानेवाला अर्थ'भाषा-शब्द-कोष'में इस तरह दिया है-" सामाजिक-(वि.सं.) समाज का, समाजसंबंधी , समाज या सभा से संबंध रखनेवाला ,सदस्य।"[2] 'सामाजिक ' के उपर्युक्त अर्थों को ध्यान में रखते हुए ' सामाजिक ' शब्द का अर्थ इस समाज का या समाज से संबंध रखनेवाला ऐसा लिया जा सकता है ।

3.5 **'चेतना' शब्द का अर्थ--**

'चेतना' शब्द का प्रयोग साहित्य;दर्शन और मनोविज्ञान में भी मिलता है । विज्ञानवादी और प्रत्ययवादी दार्शनिक 'चेतना ' या ' विज्ञान ' को शाश्वत और एकमात्र सत्ता मानते हैं । इस अर्थ में 'चेतना ' शब्द आत्मा का समानार्थक बन जाता है । परन्तु साहित्य और दर्शन में इस अर्थ के लिए प्रायः 'चैतन्य ' शब्द का प्रयोग किया जाता है । 'चेतना ' शब्द का अधिक प्रयोग मनोविज्ञान में किया जाता है । अलग-अलग शब्दकोशों में'चेतना'शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है --' संक्षिप्त हिन्दी

---

1 सं. श्री नवल जी -नालन्दा विशाल शब्दसागर पृष्ठ 1434 ।

2 सं. डॉ. रमाशंकर शुक्ल "'रसाल' " - भाषा शब्द - कोष - पृष्ठ - 1555 ।

शब्दसागर ' में 'चेतना ' का अर्थ इस तरह है – "चेतना – संज्ञा स्त्री.(सं.)? चैतन्य ।संज्ञा । होश । ज्ञान । बुद्धि । ज्ञानात्मक मनोवृत्ति । समझ ।3.स्मृति । सुधि ।याद ।4 जीवन । क्रि.अ.(हिं.चेत) संज्ञा में होना । होश में आता । 2 सावधान होना । चौकस होना । क्रि.स. –विचारना ।समझना ।"[1] 'हिन्दी विश्वकोश ' के सप्तम भाग में ' चेतना ' का अर्थ इस प्रकार दिया है-" चेतना – (सं.स्त्री.) चित्–युच–टाप ।1. बुद्धि ,मन की वृत्ति विशेष ।2. मन की एक वृत्ति , ज्ञान ।(गीता –12-16) 3.चैतन्य , चेतनता, संज्ञा ,होश ।4. चित्तवृत्ति विशेष स्वरूप ज्ञानव्यंजक प्रमाण का असाधारण कारण ।(शब्दार्थ वि..) 5.स्मृति ,सुधि ,याद । चेतना –(हि.क्रि) 1.सावधान होना, चौकन्ना होना ।2. होश में आना । 3. विचारना,सोचना, ध्यान देना, समझना ।"[2] ' मानक हिन्दी कोश ' के दूसरे खण्ड में "चेतना" शब्द के अर्थ पर इस प्रकार प्रकाश डाला है-"**चेतना – स्त्री.(सं. चित् + युच्** –अन, टाप) 1.मन की वहवृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक (अनुभूतियों, भावों, विचारों आदि) और बाह्य (घटनाओं) तत्वों या बातों का अनुभव या भान होता है। होश–हवास ।2.बुद्धि । समझ । 3 मनोवृत्ति ,विशेषतः ज्ञानमूलक मनोवृत्ति ।4 याद । स्मृति । अ.(हि.चेत) 1 संज्ञा से युक्त होना । होश में आना । उदा. नैन पसारि चेत धन चेती ।– जायसी । 2 ऐसी स्थिति में होना कि बूरे परिणामों या बातों से बचकर अच्छी बातों की ओर प्रवृत्त हो सके ।3 सावधानया होशियार होना । 4 सोच–समझकर किसी बात की ओर ध्यान देना ।स.–विचारना । समझना । जैसे - किसी का बुरा या भला सोचना"[3] 'आधुनिक हिन्दी शब्द कोश' में 'चेतना' का अर्थ अत्यंत सरल एवं स्पष्ट शब्दों में अर्थ दिया है-'चेतना – स्त्री.सं. मन की वह वृत्ति जो जीव को अंतर एवं बाह्य का ज्ञान कराती है, वह स्थिति जो प्राणी के चेतन होने का प्रमाण देती है । संज्ञा, ज्ञान, प्रतिबोध, सजीवता, बुद्धिमत्ता , तर्कना शक्ति , चेतस ।"[4] 'चेतना 'शब्द के उपर्युक्त अर्थो को ध्यान में रखते हुए 'चेतना ' का अर्थ इस प्रकार लिया जा सकता है कि 'चेतना ' बुद्धि या मन की वह वृत्ति विशेष है जिसके कारण मनुष्य या प्राणी को अनुभूतियों, भावों, विचारों, बाह्य घटनाओं , तत्वों आदि का अनुभव या भान होता है ।सोच–समझकर किसी बात की ओर ध्यान देने को चेतना कहा जाता है ।

3.5.1 **'दर्शन ' के क्षेत्र में 'चेतना "का स्वरूप--**

मानव चेतना की तीन विशेषताएँ हैं वे ज्ञानात्मक , भावात्मक और क्रियात्मक होती है ।

---

1 सं.रामचन्द्र वर्मा –संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर ,पृष्ठ–322 ।

2 सं.नगेद्रनाथ बसु–हिन्दी विश्वकोश,सप्तम भाग,पृष्ठ–488 ।

3 सं.रामचन्द्र वर्मा –मानक हिंदी कोश,दूसरा खण्ड ,पृष्ठ–274 ।

4 सं.डॉ.गोविन्द चातक –आधुनिक हिन्दी शब्द–कोश,पृष्ठ–211 ।

भारतीय दार्शनिकों ने इसे सच्चिदानन्द रूप कहा है । चेतना वह तत्व है, जिसमें ज्ञान और भाव की अनुभूति व्यक्ति को होती है अर्थात क्रियाशीलता की अनुभूति होती है, उसके प्रति प्रिय अथवा अप्रिय भाव पैदा होता है और उसके प्रति इच्छा पैदा होती है जिसके कारण या तो हम उसे अपने समीप लाते हैं अथवा उसे अपने से दूर हटाते हैं ।

3.5.2 मनोविज्ञानके क्षेत्र में ' चेतना ' का स्वरूप--

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से ' चेतना ' वह तत्व है जिसके कारण मनुष्य को सभी प्रकार की अनुभूतियाँ प्राप्त होती है । चेतना के कारण ही मनुष्य देखता हे, सुनता है , समझता है और अनेक विषयों पर चिंतन करता है ।इसके कारण ही मनुष्य को सुख-दुःख की अनुभूतियाँ होती हैं । चेतना के कारण ही मनुष्य जीवित कहलाता है । चेतना के कारण मनुष्य को आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों का ज्ञान होता है। चेतना के दमन या संघर्ष से मनुष्य का व्यक्तित्व खंड़ित या बहुव्यक्तित्व आदि रोगों से ग्रस्त हो जाता है । उपर्युक्त विवेचन के पश्चात अब हम 'सामाजिक चेतना ' को परिभाषित करते हुए उसके स्वरूप को निर्धारित करेंगे ---

3.6 "सामाजिक चेतना 'की परिभाषा और स्वरूप--

संपूर्ण समाज से संबंध रखनेवाले व्यक्ति की ज्ञानात्मक ,भावात्मक और क्रियात्मक वृत्ति सामाजिक चेतना है । इसके कारण ही व्यक्ति समाज में रहकर अपने परिवेश से प्राप्त विविध सामाजिक संबंधों का निर्वाह करता है । विशिष्ट भू-प्रदेश में रहकर व्यक्ति समान संस्कृति का पालन करता है । सामाजिक चेतना सामाजिक वातावरण के संपर्क से विकसित होती है । विकास की चरमसीमा में या बंधनों की अतिशयता के कारण सामाजिक चेतना स्वतंत्रता की माँग करती है तब सामाजिक नीति-नियम, संस्कृति आदि में परिवर्तन आ जाता है । सामाजिक चेतना निरंतर गतिशील रहती है ।

समाज में रहनेवाले विभिन्न व्यक्तियों की चेतना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी निरंतर गतिशील रहती है । क्योंकि 'चेतना ' वह तत्व है जिसके कारण मनुष्य को आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों का ज्ञान होता है और उसी अनुपात में मनुष्य कार्य करता है । इस दृष्टि से व्यक्ति की चेतना समाज को भी प्रभावित करती है क्योंकि विभिन्न व्यक्तियों के आपसी व्यवहार ,नियंत्रण और स्वतंत्रता के कारण सामाजिक संबंधों पर उसका असर होता है ।

धर्म व्यवस्था , राज सत्ता, अर्थ के कारण हुए वर्ग–भेद , संस्कृति, सामाजिक नीति–नियम, व्यक्ति–व्यक्तियों के आंतरिक संबंध, रिश्ते–नाते आदि सभी बातों का संबंध सामाजिक चेतना से होता है ।

3.7 "**मीमांसा** " **का अर्थ**––

भीष्म साहनी के नाटकों में प्राप्त सामाजिक चेतना की मीमांसा करने के पूर्व ' मीमांसा ' का अर्थ देखना अप्रांसंगिक न होगा ।

अनेक शब्दकोशों में प्राप्त ' मीमांसा ' के अर्थ में समानता है ।'संक्षिप्त हिन्दी शब्द–सागर ' 'में मीमांसा के अर्थ के बारे में इस प्रकार लिखा है-" मीमांसा – संज्ञा स्त्री. (सं.) 1 अनुमान, तर्क आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कोई बात कैसी है । 2. हिन्दूओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन जो पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा कहलाते हैं ।3 जैमिनीकृत दर्शन जिसे पूर्वमीमांसा कहते हैं ।"[1] 'आधुनिक हिंदी शब्द–कोश '' में 'मीमांसा ' को अर्थ के बारे में लिखा है-''मीमांसा – स्त्री.सं. गहन विचार , जिज्ञासा, अन्वेषण, परीक्षण, अनुसंधान, चिंतन या वह गहन विचार जो किसी विषय के मूल तत्व को जानने के लिए किया जाय, किसी विषय का गंभीर विवेचन ,भारतीय दर्शनों में से एक, वेद मीमांसा .कर्म मीमांसा ।"[2] ' नालंदा विशाल शब्द–सागर' में मीमांसा के अर्थ के बारे में लिखा है –– "मीमांसा – (संज्ञा स्त्री.)1 अनुमान तथा तर्क विर्तक द्वारा यह निश्चय करना कि कोई बात वास्तव में कैसी है । 2 हिन्दूओं के छः दर्शनों में से पूर्व मीमांसा तथा उत्तर–मीमांसा , जो वेदांत के नाम से प्रसिद्ध है. ।"[3] ' भाषा-शब्द-कोष ' में मीमांसा का अर्थ देते हुए इस प्रकार लिखा है –– " मीमांसा – (संज्ञा स्त्री.सं.। अनुमान और तर्कादि के द्वारा यह स्थिर करना कि वह बात मान्य है या नहीं ,छः दर्शनों में से उत्तर–मीमांसा और पूर्व मीमांसा नामक दर्शन शास्त्र ।"[4] उपर्युक्त शब्दकोशों में प्राप्त मीमांसा के अर्थ पर गौर करते हुए मीमांसा का अर्थ इस प्रकार लिया जा सकता है कि 'अनुमान, तर्कादि के द्वारा यह तय करना कि कोई बात वास्तव में कैसी है, तर्कादि के द्वारा यह स्थिर करना कि कोई बात मान्य है या नहीं, किसी विषय का गंभीर विवेचन, भातीय छः दर्शनों में से एक दर्शन, वेदान्त दर्शन, जैमिनिय दर्शन।'

---

1 सं. रामचंद्र वर्मा –संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर –पृष्ठ – 804 ।
2 सं. डॉ.गोविन्द चातक –आधुनिक हिंदी शब्द कोश, पृष्ठ –431 ।
3 सं.श्री.नवल जी –नालंदा विशाल शब्द–सागर, पृष्ठ–1100 ।
4 सं.डॉ. रामशंकर शुक्ल ' रसाल 'भाषा-शब्द-कोष, पृष्ठ – 1258 ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

3.8 विवेच्य नाटकों में सामाजिक चेतना की मीमांसा--

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात सब यहाँ भीष्म साहनी के नाटकों में प्राप्त सामाजिक चेतना की मीमांसा प्रस्तुत है --

3.8.1 पारिवारिक संबंध--

भीष्म साहनी मार्क्सवादी साहित्यकार है और मार्क्सवादी साहित्यकार की रचना सामाजिक चेतना से अनुप्राणित होती है क्योंकि मार्क्सवादी रचनाकार साहित्य का नाता समाज से है ऐसा मानते हैं । भीष्म साहनी ने अपने सारे नाटकों का सृजन सामाजिक चेतना से अनुप्राणित होकर ही किया है ।

समाजशास्त्री परिवार को समाज की छोटी प्रतिकृति मानते हैं अतः परिवार में रहनेवाले स्त्री-पुरूषों में पति-पत्नी, पिता-पुत्री, माता-पुत्री, माता-पुत्र, पिता-पुत्र , भाई-भाई, बहन -भाई के रूप में जो पारिवारिक संबंध होते हैं उनको समाजशास्त्री महत्त्वपूर्ण मानते हैं । इस दृष्टि से देखा जाय तो भीष्म साहनी ने अपने सभी नाटकों में पारिवारिक संबंधों का चित्रण यथार्थ तथा मानवीय भावनाओं से युक्त किया है ।

3.8.1.1. पति-पत्नी संबंध--

"हानूश "नाटक में हानूश और कात्या के बीच के संबंध पति पत्नी के हैं । हानूश एक मामुली कुफ़्लसाज़ होकर भी देश की पहली घड़ी बनाने की धून में हमेशा रहता है । वह एक दिन ताले बनाता है और दस-दस दिन खाली रहता है । फलस्वरूप वह अपने परिवार का पोषण ठीक ढंग से नहीं कर पाता । हानूश और उसकी पत्नी कात्या में कोमल ,मधुर आंतरिक संबंध होते हुए भी अर्थाभाव के कारण कटुता आ गयी है । इसलिए नाटक के प्रथम अंक के प्रारंभ में ही कात्या अपने पति हानूश के बारे में अनादर और तिरस्कार के साथ यह कहने के लिए मजबूर है-"उसमें पतिवाली कोई बात हो तो मैं उसकी इज्जत करूँ । जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता, उसकी इज्जत कौन औरत करेगी ?"[1]

निम्नवर्गीय संयुक्त परिवारों में अर्थ के कारण जो मानसिक यंत्रणाएँ भुगतनी पड़ती है, उसका असर पति-पत्नी और घरवालों के संबंधों पर भी पड़ता है । इस दृष्टि से कात्या कथन देखिए ---

---

1 भीष्म साहनी -हानूश , पृष्ठ- 29 ।

".... छोटी – सी थी, जब मैं इसके घर ब्याह कर आई । घर में हानूश को कोई पूछता ही नहीं था दुनिया में इज्जत भी उसीकी होती है जिसका घरवाला कमानेवाला हो । यह सभी की पूँछ बना घूमता था ।"[1]

अर्थाभाव एवं घर की आर्थिक हालत से तंग आकर हानूश और कात्या के बीच के पति–पत्नी के संबंधों में आयी कटुता के कारण पति–पत्नी में झगड़ा हुआ है । निम्नवर्गीय घरों में निकम्मे पतियों की जो दुर्गति घर चलानेवाली स्त्रियाँ करती हैं, वह दुर्गति कात्या ने हानूश की की है । इसका स्पष्ट उल्लेख हानूश के इस कथन द्वारा हुआ है -" कात्या, तीन बार तो तुम घड़ी की कमानियाँ तोड़ चुकी हो, दो बार सारा सामान खिड़की में से बाहर फेंक चुकी हो, कुछ नहीं तो छः बार मुझे पीट चुकी हो । फिर भीकहती हो कि आज तुम्हारी प्रार्थना कबुल हुई है ?"[2]

कात्या एक पत्नी के रूप में हानूश की सहयोगी और सहधर्मिणी है । अतः वह जेकब को अपने घर में पनाह इसलिए देती है कि हानूश पारिवारिक चिंताओं से मुक्त होकर घड़ी बनाये । कात्या अपने पति से अटूट प्रेम भी करती है और दिल से हमेशा उसकी कामयाबी के लिए प्रार्थना करती है । वह कहती है-" मैं दिल से तो यही चाहती थी कि तुम्हें कामयाबी मिले, भगवान से भी यही माँगती थी हानूश भी अपनी पत्नी के प्रति कृतज्ञ है । हानूश कहता है-" मेरी इस कामयाबी के पीछे तुम्हारी कुर्बानी है । हर काम के पीछे किसी औरत की प्रार्थना होती है, उसकी कुर्बानी होती है , उसकी प्रेरणा होती है ।"[4] पति–पत्नी के बीच कोमल , आंतरिक संबंध होने के कारण कात्या, राज–सत्ता द्वारा अंधे किये गये अपने पति की मनोदशा और व्यथा से पूरी तरह परिचित है । इसलिए ऐमिल की सलाह पर देश छोड़कर तुला राज्य में बाकी जिंदगी गुजारने की वह सोचती है ।

'कबिरा खड़ा बजार में ' नाटक के कबीर के माता–पिता नीमा – नूरा में पति–पत्नी का संबंध है तथा कबीर और लोई के बीच पति–पत्नी के संबंध हैं । नूरा–नीमा साधारण जुलाहा दंपति है जो कबीर को लेकर परेशान हैं क्योंकि कबीर सब के साथ शास्त्रार्थ कर के झगड़ा मोल लेता है । नूरा नाराज होकर कबीर से कुछ कहना चाहता है लेकिन नीमा उसे मना करती है । कबीर की पत्नी लोई सीधी–सादी, सरलहृदय है, इसलिए वह निःसंकोच भाव से कबीर को बताती है कि उसे किसी साहुकार

---

1 भीष्म साहनी –हानूश –पृष्ठ – 32 ।
2 वही– पुष्ठ–77 ।
3 वही, पृष्ठ– 77 ।
4 वही, पृष्ठ – 78 ।

के बेटे से प्रेम था । वह उसके साथ भागकर शादी करना चाहती थी । कबीर उदारहृदय है, इसलिए अपनी पत्नी को साहुकार–पुत्र के पास स्वयं छोड़ आने को तैयार हो जाते हैं । लोई कबीर का कहना मान, साहुकार – पुत्र के पास चली जाती है, लेकिन बीच के रास्ते से लौटकर पुनः कबीर के पास आती है । कबीर उसका हाथ पकड़कर उसे घर में लेते हैं । लोई कहती है -"अब तो मैं अपने आप घर आयी हूँ ।पहले तो बापू ने ब्याह कर भेजा था । अब तो अपने आप आयी हूँ । और तू हाथ पकड़कर मुझे अंदर लाया है ।"[1] कबीर उसे अपने हाथों से बनायी हुई लाल रंग की चुनरी पहनाते हैं। उन्होंने यह चुनरी बुनते समय कवित्त भी बनाये थे । वही चुनरी ओढ़ कर लोई कबीर के भण्डारे में शामिल होकर सहधर्मिणी के रूप में पेश आती है । कबीर और लोई के बीच के पति–पत्नी संबंध मधुर एवं प्रेमपूर्ण है ।

'माधवी ' की नायिका माधवी का संबंध पत्नी के रूप में तीन राजाओं क्रमशः हर्यश्च, दिवोदास और उशीनर के साथ आता हे ।माधवी और इन राजाओं के बीच का पति–पत्नी संबंध तब तक बना रहता है जब तक माधवी एक चक्रवर्ती राजकुमार की माँ बन जाती है । पुत्र–जन्म के बाद माधवी का उन राजाओं के साथ पत्नी के रूप में कोई संबंध नहीं रहता ।अंत में वह ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में उनकी पत्नी के रूप में रहती है । माधवी के जीवन में आये इन चारों पुरूषों के बीच के पति–पत्नी के संबंध अस्थायी रूप एवं एक सौदा स्वरूप होते हैं क्योंकि हर एक को माधवी के बदले में गालव को दो सौ अश्वमेधी घोड़े देने पड़ते है । राजा हर्यश्च सौदा करते समय गालव और माधवी से कहता है -" हम युवती को अपने रानिवास में रख लेंगे ।पुत्र–लाभ होने पर हम से अपनी पटरानी भी बना सकते हैं । जब इसके गर्भ से हमें पुत्र–लाभ होगा, हम दो सौ अश्वमेधी घोड़े तुम्हें गिनकर दे देंगे ।"[2] दिवोदास तो गालव और माधवी को पुत्र–जन्म न होने पर उन्हें काल–कोठरी में बंद करने की धमकी देते हुए कहता है-" हम इस युवती को अपने रनिवास में रखेंगे । पुत्र लाभ होने पर हम तुम्हें अश्वमेधी घोड़े दे देंगे ।दो सौ घोड़े ।न एक कम न एक ज्यादा ।और इस भीलनी को भी मुक्त कर देंगे ।पर यदि पुत्र न हुआ और अठारहवीं बेटी हुई तो हम ,तुम दोनों को काल–कोठरी में बंद कर देंगे ।"[3] समस्त आर्यावर्त में अश्वमेधी घोड़े शेष न रहने पर माधवी गालव को गुरू–दक्षिणा से

---

1 भीष्म साहनी–कबिरा खड़ा बजार में , पृष्ठ–85 ।

2 भीष्म साहनी – माधवी , पृष्ठ - 34 ।

3 वही, पृष्ठ –65 ।

मुक्ति दिलाने हेतु ऋषि विश्वामित्रके आश्रम में जाकर उनके साथ पत्नी के रूप में रहती है । वह विश्वामित्र से कहती है:"ये छः सौ घोड़े ग्रहण करें महाराज, और शेष दो सौ घोड़ें के लिए ..... ।

विश्वामित्र : हाँ, कहो, रूक क्यो गयी ?

माधवी : शेष दो सौ घोड़ो के लिए आप मुझे अपने पास रख ले ।

विश्वामित्र स्तम्भित सा, माधवी की ओर देखता रह जाता है ।

माधवी : महाराज , मैं उसी भाँति आपकी आज्ञा का पालन करूँगी, जिस भाँति राजाओं के रनिवास में करती रही हूँ । मैं विशिष्ट लक्षणोंवाली हूँ , महाराज , आपको भी मुझ से पुत्र लाभ होगा । (विश्वामित्र अभी भी उसे देखे जा रहा है ।) मुझे ग्रहण कर आपको पश्चाताप नहीं होगा, महाराज । सभी राजा मेरे साथ प्रसन्न थे । सभी मुझे अपने रनिवास में रखना चाहते थे । पुत्र-लाभ होने पर आप गालव को गुरू-दक्षिणा के दायित्व से मुक्त कर दें ।"[1] माधवी के जरिए गुरू-दक्षिणा जुटाने में गालव सफल हो जाता है और माधवी मुक्त हो जाती है । राजा ययाति माधवी का स्वयंवर रचाते हैं । स्वयंवर में वे तीनों राजा हर्यश्च, दिवोदास और उशीनर माधवी को पत्नी रूप में पाने के लिए अपने पुत्रों को लाते हैं ताकि पुत्र-मोह में फँसकर माधवी उन्हें पति के रूप में चुन ले । "आश्रमवासी कहता है -- माधवी को प्रलोभन देने के लिए । प्रार्थियों की पाँत में बैठा राजा अपने सामने माधवी के पुत्र को खड़ा कर देगा, यह सोचकर कि अपने पुत्र को देखकर माधवी उसकी ओर खिंची चली आयेगी ।"[2] इस प्रकार हम देखते हैं कि 'माधवी ' नाटक में पति-पत्नी के संबंध मधुर और आंतरिक न होते हुए भी यथार्थ की ठोस भूमि पर मानवीय लगते हैं ।

'मुआवज़े नाटक में शांति और दीनू रिक्शावाले के बीच पति-पत्नी का संबंध है । शांति के पिता ने मुआवज़े के लोभ में पड़कर अपनी बेटी शांति की शादी दीनू रिक्शावाले के साथ कर दी है। दीनू ने वचन दिया हे कि शादी के बाद वह दंगे में मारा जाएगा तो उसकी मौत से जो दस हजार रूपये मुआवज़े के मिलेंगे उन पर शांति का अधिकार होगा । उसी पैसे से शांति का ब्याह किसी अच्छी जगह पर कर देंगे । शांति का पिता उसे समझाते हुए कहता है-" यह सच्चा ब्याह थोड़े ही है । यह तो झूठ-मूठ का ब्याह है ।

---

1 भीष्म साहनी - माधवी , पृष्ठ -80 ।

2 वही, पृष्ठ -83 ।

शांति : क्यों ?

बुजुर्ग 3 : सरकार से पैसे वसूल कर पाने के लिए । पैसे मिल जायेंगे तो तेरा ब्याह किसी अच्छी जगह पर कर देंगे ।"[1]

शादी के बाद दिनू के मन में जीने की ललक पैदा होती है । शांति दीनू के जख्मी पैर की रोज मरहमपट्टी करती है तो उसका घाव धीरे-धीरे भर जाता है। दंगे के दौरान दीनू मरा समझाकर शांति मुआवज़े पाने हेतु सेठ चोधरी जगन्नाथ के पास जाती है,तब दीनू रिक्शा चलाता हुआ आता है। दीनू को ज़िंदा देख सब उसे मारने की सोचते हैं । लेकिन शांति उसके साथ भागती है । शांति के मनमें दीनू के प्रति जो सहानुभूति की भावना थी, उसने धीरे-धीरे प्यार का रूप ग्रहण किया है । इसलिए सुथरा कहता है "यह अब पकड़ाई नहीं देगी, महाराज । उधर इश्कपेचा लड़ा हुआ है ।"[2] इस प्रकार दीनू शांति का पति-पत्नी का संबंध मानवीय बन जाता है ।पैसे के ऊपर मानवीय रिश्ता अपना स्थानबना लेता है ।

'रंग दे बसन्ती चोला 'नाटक में हेमराज और रतनदेवी के बीच पति-पत्नी के संबंध आंतरिक ,कोमल, मधुर और प्रेमपूर्ण हैं । हेमराज एक कांग्रेसी कार्यकर्ता है, जो जलियाँवाले बाग के जलसे में जाता है,हड़ताल में शामिल हो जाता है,जिसके कारण रतनदेवी परेशान और चिंतित होती रहती है ।वह भी पति के कार्य में सहयोगी होती है ।गली में से जख्मी ईसाइन को,हेमराज घर लाता है,तो रतनदेवी उसकी मरमहपट्टी करती है। पति-पत्नी के बीच सहज, सरल प्रेमभाव है,इसलिए हेमराज हर छोटी-बड़ी घटना का ब्यौरेवार कथन अपनी पत्नी, रतनदेवी से करता है ।वह कटरा जयमलसिंह में,हड़ताल के दिन, खानबहादुर क्यूम और मंसाराम के बीच जो कुछ घटा, उसका वर्णन करता है। रतनदेवी भी अपने पति की हर बात चाव से सुनती है।वह घर में रहकर भी हमेशा वतन की बातें करता रहता है। जलियाँवाले बाग के गोलीकाण्ड में वह गोली का शिकार हो जाता है । रतनदेवी रात के अँधेरे में उसके शव को ढूँढ निकालती है । वह अपने पति की एक एक बात याद करते हुए उसके शव से लिपट कर रोती है ।वह खुद को पापिन तथा चिरसुहागिन कहते हुए अपने आँसू रोककर कहती है-"......तू भी भगवान के पास जा रहा है । मैं रोऊँगी नहीं । मैं तेरा सफर खराब नहीं करूँगी तू हँसता - हँसता जा । भगवान तुम्हें गले लगायेंगे । खुशी-खुशी जा, मैं तुम्हें खुशी-खुशी विदा करूँगी।

---

1 भीष्म साहनी -मुआवज़े , पृष्ठ-56 ।

2 वही, पृष्ठ- 94 ।

तूने अपने लिए कभी कुछ नहीं माँगा । तू अपनी जान निछावर कर गया ।मैं पापिन तुझे सारा वक्त उलाहने देती रही । तेरे साथ झगड़ती रही, पर मुझे क्या मालूम था, तू सचमुच चला जाएगा (उसका माथा सहलाती हुई)। मैं कहाँ लुटपुट गयी ? मैं तो चिर–सुहागिन हूँ । जिसका घरवाला ऐसा शूरवीर हो। तू तो मेरा सूरमा पति है ।

मैं भी कैसी पागल हूँ, तुम्हें सारा वक्त रोकती रही, डाँटती रही । तू तो सारा वक्त मौत के साथ खेलता रहा था । तू तो नाचता गाता हुआ घर आया करता था : मेरा रंग दे,मेरा रंग दे बसन्ती चोला,मेरा रंग दे ।

तू अब भी हँसता हुआ घर की सीढ़ियाँ चढ़ेगा ,ठहाके मारता हुआ –ओं'ड्वायर की मूँछे उखाड़ दी। सरकार का शिकस्त ए फाश दी है ।रतना , सारे शहर में हड़ताल है, मुकम्मल हड़ताल । लोगों ने अपने–आप दुकानें बंद कर दी । ....तू कहा करता था,इतना मत ,मत डरा कर,यह जिंदगी डरने के लिए नहीं है,यह तो झूल जानेके लिए है और तू तो सचमुच झुल गया । तू तो सीने पर गोलियाँ खाने ही पर घर से निकला था । तू तो नाचता गाता हुआ चला गया । जयकारे लगाते हुआ ।"[1] पति की मौत के बाद रतनदेवी का रोना और पति की बातों को याद करना पति–पत्नी के सहज, स्वाभाविक और प्रेमपूर्ण संबंधों को प्रकाशित करता है । वह एक ऐसी हिन्दुस्तानी पत्नी है,जो स्वातंत्र्य समर में शहीद हुए पति के कारण स्वयं को चिरसुहागन मानती है ।

ईशरो और उसके पति में भी दाम्पत्य संबंध प्रेमपूर्ण हैं । ईशरो अपने पति पर काबू रखना जानती है । इसलिए अपने पति का कुश्ती लड़ने का तथा कुश्तियाँ देखने का शौक छुड़वाती है । वह रतनदेवी से कहती है-"पहले इसे पहलवानी का शौक था ।दोपहर नहीं हुई कि दुकान पर से उठ खड़ा होता,चाचा जी,दुकान पर नज़र रखना । मैं जरा दंगल देख आऊँ ।रोज रात को देर से लौटे । तभी मुझे एक तरकीब सूझी ।यह दंगल देखने जाये ,मैं संग–सियापे जाने लगी ।यह घर पर लौटकर आये तो घर पर ताला ।दो–चार दिन में ही ठीक हो गया ।"[2] ईशरो को पहले तो पति की पहलवानी अच्छी लगती है,लेकिन बाद में वह नहीं भाती ।इस तरह ईशरो और उसके पति के बीच के संबंध यथार्थ है।

---

1 भीष्म साहनी – रंग दे बसन्ती चोला, पृष्ठ– 85–86 ।

2 वही, पृष्ठ 17 ।

3.8.1.2 **माँ–बेटी–संबंध--**

भीष्म साहनी के केवल ' हानूश ' नाटक में माँ–बेटी के प्रेमपूर्ण संबंधों का चित्रण हुआ है कात्या और यान्का में माँ–बेटी का संबंध है । यान्का माँ की आज्ञाकारी बेटी है इसलिए मीनार लगायी घड़ी देखने जाने के बजाए वह घर पर रहती है ।वह लड़कियों को बताती है-" माँ नहीं जाने देती । कहती है, घर पर मेहमान आएँगे, तुम घर पर रहो ।"[1] कात्या को अपने बेटी के भविष्य की और विवाहित जीवन की चिंता है ।इसलिए जब हानूश यान्का की शादी जेकब के साथ करना चाहता है तब कात्या नहीं मानती । वह चिंतित हो जाती है कि जेकब भी हानूश की तरह घड़ी बनाने की धून में अपने परिवार को भूखा मारेगा । उसका सरल मातृहृदय संशकित हो कह उठता है-" वह भी घड़ी बनाएगा, मेरी बेटी को भूखों मारेगा ।"[2] इस प्रकार कात्या और यान्का के बीच के माँ–बेटी के संबंध यथार्थ और मानवीय है ।

3.8.1.3 **पिता–पुत्री–संबंध--**

' हानूश ' नाटक के नायक हानूश और यान्का में पिता–पुत्री के संबंध प्रेमभाव से युक्त हैं । यान्का अपने बापू को अधिक प्यार करती है। अपनी माँ कात्या द्वारा अपने पिता हानूश को घड़ी बनाने के लिए कोसने पर अपने पिता का पक्ष लेकर कहती है-" क्या बात है माँ, बापू घड़ी बनाते हैं तो बनाने दो ना ? तुम रोकती क्यों हो ?"[3] हानूश अपनी पुत्री के प्रति वात्सल्यभाव के कारण ही कहता है कि वह घड़ी अपनी छोटी बच्ची के लिए बना रहा है । यान्का जेकब को बताती है-" तुम जानते हो, बापू ने यह घड़ी मेरे लिए बनाई है। जब मैं छोटी थी तो वह मुझसे कहा करते थे कि यह घड़ी तो मैं अपनी बिटिया रानी के लिए बना रहा हूँ ।"[4]

' माधवी ' नामक पौराणिक नाटक में राजा ययाति और माधवी के बीच का संबंध पिता–पुत्री का है । ययाति स्वयं को दानवीर कहलाने के लोभ में और अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपनी एकमात्र युवती पुत्री माधवी को गालव को दानस्वरूप देते हैं । वह गालव को बताते हैं-" ... सुनो गालव, मैं तुम्हें आठ सौ अश्वमेधी घोड़े तो नहीं दे सकता, पर मैं अपनी एकमात्र कन्या तुम्हें सौंप सकता

---

1 भीष्म साहनी –हानूश, पृष्ठ– 72 ।
2 वही, पृष्ठ– 81 ।
3 वही, पृष्ठ – 31 ।
4 वही, पृष्ठ– 17 ।

हूँ। वह बड़ी गुणवंती युवती है ।उसे पाकर कोई भी राजा तुम्हें आठ सौ अश्वमेधी घोड़े दे देगा । निश्चय ही तुम अपना वचन निभा पाओगे ।"[1] वे माधवी को समझाते हैं-" हाँ,हाँ, मैंने तुम्हें दानस्वरूप दे दिया है । तुम्हारे माध्यम से इस युवक की प्रतिज्ञा पूरी होगी ।"[2] ययाति आश्रमवासियों को समझाते हैं- "माधवी मेरी पुत्री है। पिता के प्रति अपना कर्तव्य निभायेगी । मैंने अपना कर्तव्य निभाया है, वह भी अपना कर्तव्य निभायेगी ।"[3] लेकिन आश्रमवासी ययाति की स्वार्थपरता पर प्रकाश डालते हुए कहता है- "कर्तव्य नहीं महाराज,आपने यश की लालसा ने ऐसा किया है ताकि लोग कहें कि वनों में रहते हुए भी ययाति दानवीर है।अपनी एकमात्र कन्या को भी दान में दे सकता है ।"[4] माधवी अपना कर्तव्य भली-भाँति निभाती है ।दो सौ घोड़ों के बदले में वह अयोध्या नरेश हर्यश्च के पास रहकर एक पुत्र की माँ बन जाती है ।ययाति का आश्रमवासी मित्र मारीच ययाति को समझाता है कि ययाति विश्वामित्र के पास जाकर अनुरोध करें कि गुरूदक्षिणा का आग्रह छोड़ दें ।लेकिन वे निर्ममता से कहते हैं-" सुनो मारीच, जो दान में दिया जा चुका है,उसके बारे में सोचना अथवा चिंता करना एक दानी को शोभा नहीं देता, इसका अर्थ है उसके दान में स्वार्थ का खोट मिला हुआ है ।लोग कहेंगे कि ययाति अपनी एकमात्र पुत्री के मोह में फँसकर विश्वामित्र के सामने गिड़गिड़ाने गया है .... मारीच .... माधवी इस आश्रम से जा चुकी है ।" [5] लेकिन वे एक पिता का कर्तव्य भी नहीं भूलते । वे अपनी बेटी का स्वयंवर रचाना चाहते हैं ।माधवी गालव की गुरूदक्षिणा जुटाने में सफल होकर जब मुक्त हो जायेगी तब वे उसका स्वयंवर रचाना चाहते है ।वे कहते है-" मैं उसका स्वयंवर रचाऊँगा ,यही, इसी आश्रम में, देश-भर के राजाओं - राजकुमारों को आमंत्रित करूँगा ।माधवी जिसे चाहे अपना वर चुन ले ।"[6] गालव की प्रतिज्ञा पूरी हो जाने के बाद वे अपने आश्रम में माधवी के स्वयंवर का आयोजन करते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि राजा ययाति और माधवी के बीच का पिता-पुत्री का संबंध कर्तव्य की तीखी धार पर चलता है, जो माधवी को तीन राजाओं के रनिवास में रहकर अपने तीन पुत्रों को खो देने का दुःख देता है ।

---

1 भीष्म साहनी - माधवी, पृष्ठ -17 ।

2 वही, पृष्ठ - 18 ।

3 वही, पृष्ठ- 20 ।

4 वही, पृष्ठ - 20 ।

5 वही, पृष्ठ - 44 ।

6 वही, पृष्ठ - 46 ।

BARR. ... LIBRARY ... LHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

3.8..1.4 **पिता–पुत्र–संबंध--**

'हानूश ' नाटक में हानूश और उसके पुत्र का संबंध चित्रित नहीं हुआ है क्योंकि हानूश अपने पुत्र के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं उठा पाया है । इसलिए उसका बेटा मर चुका है ।कात्या का कथन देखिए --" ...मेरा बेटा सर्दी से ठिठुरकर मर गया । जाड़े के दिनों में सारा वक्त खाँसता रहता था ।घर में इतना ईंधन भी नहीं था कि मैं कमरा गर्म रख सकूँ । हमसायों से लकड़ी की खपचियाँ माँग–माँगकर आग जलाती रही । छः महीने तक मैं बच्चे को छाती से लगाए घूमती रही। किधर गया,मेरा मासूम बेटा ?"[1]

'कबिरा खड़ा बजार में ' नाटक में जुलाहा नूरा और नायक कबीर के बीच पिता–पुत्र के संबंध वात्सल्ययुक्त हैं । नूरा कबीर के असली पिता नहीं है । नूरा – नीमा ने कबीर को पाल–पोसकर बड़ा किया है । कबीर की वजह से नूरा परेशान होकर कहता है-" इसे न उठा लाती तो क्या मालूम मैं दूसरा निकाह कर लेता ।घर में अपना बच्चा हो जाता । इसे पाल–पोसकर बड़ा किया तो यह फल भोग रहे हैं ।दो दिन चैन के नहीं मिलते । करेजे पर होरहा भुनता रहता है ।"[2] कबीर दो बार घर से भाग गया था, तब नूरा ने उसे ढूँढकर ,उसकी मिन्नत कर के उसे वापस घर लाया था । नूरा बताता है-"... मैं जंगलों की खाक छानता, मिन्नत–समाजत कर के इसे लौटा लाया तो सात महीने बाद फिर भाग खड़ा हुआ । अब इसे रस्सियों से बांधकर तो नहीं रखा जा सकता ना । कहीं बाँधे गाँव बसा है ?[3] नूरा को कबीर की बैठकबाजी करना, शास्त्रार्थ कर के हर किसी से उलझना अच्छा नहीं लगता,क्योंकि इससे कबीर को मार खानी पड़ती है । वह कहता है-"मुझ से पूछ ,भाँग धतूरा इतना बुरा नहीं है जितना यह सास्तरार्थ । यह तो कभी छूटता ही नहीं , घरों के घर तबाह हो जाते हैं । सिर–फुटौव्वल अलग होती है ।"[4] नूरा मौलवी के आगे गिड़गिड़ाकर कबीर के शास्त्रार्थ तथा बैठकबाजी की मुआफी माँगता है, इसका स्पष्ट उल्लेख मौलवी के कथन से होता है-" तेरी खैर नहीं । तेरे बापू नूरे की वजह

---

1 भीष्म साहनी – हानूश, पृष्ठ – 31 ।
2 भीष्म साहनी – कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ–18 ।
3 वही, पृष्ठ– 17 ।
4 वही, पृष्ठ– 18–19 ।

से हम अब तक चुप हैं वरना अब तक तुम्हें जिंदा गाड़ दिया होता । वही हाथ जोड़ता , गिड़गिड़ाता फिरता है और हमें रहम आ जाता है।"[1] इस प्रकार नूरा और कबीर में पिता-पुत्र के संबंध वात्सल्ययुक्त हैं । कबीर के प्रति संतान-प्रेम के कारण ही नूरा उसे ढूँढ़ता है तथा मौलवी के आगे प्रार्थना करता है ।

3.8..1.5 **माता-पिता का संबंध--**

'कबिरा खड़ा बाजार में 'नाटक की नीमा और कबीर में माता और पुत्र का संबंध है । नीमा ने कबीर को जन्म नहीं दिया है। कबीर यह सच नीमा के मुँह से उगलवा लेता है ।नीमा बताती है- "..हम गंगा पार कर जुलाहों की बस्ती की तरफ जा रहे थे । तभी मैं पानी पीने के लिए एक तालाब के पास उतरी । तू मुझे वहाँ पड़ा मिला । तेरे होठों पर अभी भी तेरी माँ का दूध लगा था ।... मेरी गोद तो अल्लाह - ताला ने मेरे ब्याह के पहले दिन ही भर दी थी ।"[2] नीमा कबीर को सोना जेसा बेटा मानती है । वह नूरा से कहती है-"... उस जैसा बेटा तो दिया लेकर ढूँढे नहीं मिलेगा । किस्मतवाले थे जो ऐसा सोना बेटा पाया । हमारा घर उज्जर हो गया । कभी ऊँची आवाज में बोलता नहीं है ।"[3] नूरा को कबीर का अपने साथियों के साथ बैठकबाजी करना अच्छा नहीं लगता तब वह कबीर का पक्ष लेकर कहती है-" हमजोलियों के साथ ही उठता बैठता है ना, इसमें बेजा क्या है ? भाँग धतूरा तो नहीं पीता, जुआ तो नहीं खेलता ।"[4] नीमा कबीर को मुल्ला-मौलवी से तथा साधु महंतों से न उलझने की सलाह देती है-" कुछ सोच-समझकर बात किया कर । यह काशी है बेटा, हिन्दूओं का तीरथ है ।और यहाँ का कोतवाल मुसलमान है । सभी कहते हैं बड़ा बेरहम आदमी है, जिंदा दफना देता है । तू हर किसी से दुश्मनी मोल लेता फिरता है, बेटा , मेरा दिल बहुत डरता है ।"[5] वह कबीर की लहु-लुहान पीठ पर हल्दी तेल लगाती है ।वह उसे किसी दूसरे शहर में जाकर, अपनी बीवी के साथ घर बसाने की सलाह देती है ।वह कहती है-" किसी दूसरे शहर में रहेगा तो आराम से तो

---

1 भीष्म साहनी -कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ - 73 ।

2 वही, पृष्ठ - 24 ।

3 वही, पृष्ठ - 18 ।

4 वही, पृष्ठ - 18 ।

5 वही, पृष्ठ - 21 ।

रहेगा ।तुझे कोड़े तो नहीं पडेंगे । तू चला जा । वहाँ अपनी खड्डी लगा लेना । अच्छा हो, शादी करके चला जा ।अपनी घरवाली को साथ ले जा ।कभी कभी हम तुझ से मिलनें आ जाया करेंगे ।"[1] वह कबीर से बेहद प्यार करती है । कबीर अपनी माँ के प्यार से अभिभूत होकर कहता है-" सोचता हूँ करतार ने माई को कैसा बनाया है । न मैं उसका बेटा, न वह मेरी माई, फिर भी सारा वक्त वह मुझे अपनी छाँव में लिये रहती है । मानो अपने आप से बात कर रहा हो ।.... जब कोई आँधी चलती है तो अपनी दुबली-सी काया से मुझे अपनी ओट में ले लेती है, कि आँधी - बवण्डर के थपेडे उस पर पड़े ,कबीरा बच जाये । .... माई के दिल में जैसे कोई बाती जलती रहती है प्रेम की बाती उसीकी लौ में वह सारा वक्त जीती है ।"[2] नीमा को कबीर की शादी की चिंता रहती है,इसलिए वह पीपा को कबीर को समझाने को कहती है ।इस प्रकार कबीर और नीमा के माता-पिता - पुत्र के संबंध यथार्थ और वात्सल्यपूर्ण रूप में भीष्म साहनी ने चित्रित किये हैं ।

'कबीरा खड़ा बजार में ' नाटक में भीष्म साहनी ने नन्दू नामक भिखारी और उसकी अंधी माँ के संबंधों का चित्रण हृदयस्पर्शी रूप में चित्रित किये हैं । कोतवाल द्वारा कोड़े लगाये जाने पर नन्दू मर जाता है । उसकी अंधी माँ कबीर के कवित्त गाकर, कोड़े खाकर मर जाना चाहती है ।नन्दू पर जो कोड़े पड़े ,उस चोट की पीड़ा उसका मातृहृदय जानता है ।माँ और बेटे में अटूट प्यार है । वह कहती है-"जो कोड़े नन्दू की पीठ पर पड़े थे, वह मेरी ही पीठ पर पड़े थे, बेटा । बच्चे पर पड़नेवाले कोड़े माँ की ही पीठ पर पड़ते हैं । पर मैं मरी नहीं, नन्दू मर गया । मैं सह लूँगी कबीरा । नन्दू का मरना सह लिया तो कोड़े न सहूँगी । मैं गली-गली गाती फिरूँगी । अब मैं गाऊँगी और वह सुनेगा ।जहां पर भी है,सुनेगा ।सुनेगा ना, कबीर ?"[3] वह मरकर नन्दू के पास जाना चाहती है, इसलिए वह कहती है-"मैं अपने नन्दु के पास जाऊँगी रे । जालिमों ने उसे कोड़े मार-मारकर मार डाला...।"[4]

---

1 भीष्म साहनी -कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ - 27 ।

2 वही, पृष्ठ -68 ।

3 वही, पृष्ठ - 51 ।

4 वही, पृष्ठ - 51 ।

'माधवी ' नाटक में, भीष्म साहनी ने नायिका माधवी और उसके नवजात तीन शिशु ,इनमें माता–पुत्रों का संबंध सपाट लहजे में चित्रित किया है । माधवी राजा हर्यश्च के पुत्र की माँ बन जाती है । अनुबंध के अनुसार बच्चे को जन्म देते ही अपने पुत्र वसुमना को धाय के हाथों सौंपकर राजप्रासाद छोड़ देती है ।लेकिन उसका मातृहृदय बार–बार अपने पुत्र को याद करता है ।उसे लगता है कि वसुमना जागकर रो रहा है ।वह गालव को बताती है-"बच्चा रोया है ।वसुमना की आवाज थी । वह जाग गया है । धाय की गोद में ..।"[1] वसुमना के प्यार में फँसी ,वात्सल्य के कारण माधवी गालव से अनुरोध करती है " क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम कुछ दिन और यहाँ बने रहे ? मैं महलों के अंदर नहीं जाऊँगी ।यहीं, बाहर ही कहीं पड़े रहेंगे । मैं धाय से कहूँगी ,दिन में एक बार वह वसुमना को मेरे पास ले आया करे ।"[2] राजा के साथ अनुबंध पूरा हो जाने पर ,गालव के अनुसार माधवी अब स्वतंत्र है । लेकिन माधवी का मातृहृदय कराहकर कहता है कि माँ अपने बच्चे को छाती को लगा पाती है, वही स्वतंत्र है।।वह सोचती है कि न जाने जब वसुमना बड़ा होकर चक्रवर्ती बनेगा, तब वह कहाँ होगी वसुमना के कारण माधवी का मातृहृदय बड़ा आकुल हो उठता है वह कहती है-"पर अब तो सारा वक्त मेरी आँखों के सामने वसुमना का चेहरा ही घूमता है ।"[3]

गालव के लिए घोड़े जुटाने के लिए माधवी वसुमना को त्याग कर काशी नरेश दिवोदास के प्रतर्दन नामक पुत्र की माँ बन जाती है । अपने दूसरे नवजात शिशु प्रतर्दन को महलों के अंदर ही छोड़कर माधवी बाहर आती है ।अब की बार उसने अपने बच्चे का मुँह तक नहीं देखा । प्रतर्दन को त्याग, माधवी राजा उशीनर के पुत्र शिबि की माँ बन जाती है । लेकिन माधवी को संतान धारण करने से डर लगता है । वह गालव से कहती है-"मैं तो वह माँ हूँ जिसकी गोद भरती गयी और खाली होती गयी. अब तो संतान धारण करने से ही मुझे डर लगता है ।संतान धारण करने का मेरे लिए केवल एक ही अर्थ है अपने बच्चे को खो देना ।"[4] माधवी के स्वयंवर में वे तीनों राजा भी आते हैं, जिनके रनिवास में वह रह चुकी है। वे तीनों अपने साथ माधवी से हुए बच्चे भी लाये हैं । माधवी व्याकुल होकर कहती है-..."तीनों राजा मेरे बच्चों को साथ लेकर यहाँ पहुँच गये हैं । जैसे मछली पकड़ने के लिए काँटे में

---

1 भीष्म साहनी –माधवी, पृष्ठ –50 ।

2 वही, पृष्ठ – 51 ।

3 वही, पृष्ठ – 51 ।

4 वही, पृष्ठ –95 ।

छोटी मछली लगा दी जाती है, वैसे मेरे बच्चों को मेरे सामने लाकर मुझे प्रलोभन देंगे ।"[1] इस प्रकार माधवी और उसके तीनों बच्चों का आपसी संबंध करूणाजनक, मानसिक तापदायक एवं क्लेशकारक है ।

3..8.1.6 **भाई–भाई का संबंध––**

भीष्म साहनी के प्रथम नाटक ' हानूश ' के नायक हानूश ओर पादरी में भाई–भाई का संबंध है। पादरी भाई ने अपने छोटे भाई के प्रति प्रेमभाव के कारण हानूश की घड़ी बनाने की धून को ध्यान में रखते हुए पुश्तैनी घर उसके नाम कर दिया है और गिरिजावालों की तरफ से आर्थिक सहायता का भी प्रबंध कर दिया है । कात्या के इस कथन से इस बात का पता चलता है-"..... यह तो भला हो. आपका कि आपने सिर छिपाने के लिए घर दे दिया है, या फिर गिरिजेवाले छोड़ी सी मा मदद दे देते हैं वरना न जाने कहाँ कहाँ ठोकरे खाते फिरते ।"[2] पादरी ने पिछले तेरह साल से हानूश का हौसला घड़ी बनाने के लिए बढ़ाया था । इस प्रकार भीष्म साहनी ने हानूश और पादरी के बीच का भाई–भाई का संबंध यथार्थ और मानवीय रूप में चित्रित किया है ।

3.8.1.7 **बहन–भाई का संबंध**

'रंग दे बसन्ती चोला ' नाटक की रतनदेवी और सोहनसिंह में बहन और भाई का संबंध है । सोहनसिंह के आने पर रतनदेवी खुश होकर प्यार से अपने भाई की बाँहों में सिमट जाती है । वह कहती है-"हाय, वीर जी आये हैं ।... मैं भी कहूँ , मेरी आँख सुबह से क्यों फड़क रही है । मुझे क्या मालूम मेरे वीर जी आनेवाले है ।"[3] सोहनसिंह एक क्रान्तिकारी है, जो बम बनाता है । पुलिस की नजरों से बचकर वह अपनी बहन के घर पनाह लेने आया है । वह अपनी बहन को सुन्दरवन बंदरगाह पर किस तरह उसके साथी पुलिस की गोलियों का निशाना बने और वह अकेला रह गया यह सुनाकर रो पड़ता है ।वह भावुक है । रतनदेवी अपने भाई को धीरज बँधाती है । सोहनसिंह को गांधी की बातें अच्छी नहीं लगती । वह कहता है-".. चरखा कातने से, नारे लगाने से कुछ नहीं होगा । कभी उपवास कर रहा है ,कभी प्रार्थना करता है, अंग्रेजों को अपना बाप कहता है । कौम को नपुंसक बना रहा है।"[5]

1 भीष्म साहनी –माधवी , पृष्ठ – 93 ।
2 भीष्म साहनी – हानूश, पृष्ठ – 33 ।
3 भीष्म साहनी – रंग दे बसन्ती चोला, पृष्ठ – 23 ।
4 वही, पृष्ठ– 28 ।
5 वही, पृष्ठ – 37 ।

रतनदेवी उसे समझाती है-" ऐसा नहीं कहते, वीर जी । गांधी रब्ब दा बंदा है ,बहुत बड़ा आदमी है, महापुरख है ....।"[1] पुल पर गोली चलने पर बहन के मना करने पर भी वह हेमराज को ढूँढ़ने जाता है । इस प्रकार भीष्म साहनी ने रतनदेवी और सोहनसिंह के बीच का बहन–भाई का संबंध यथार्थ और मानवीय रूप में चित्रित किया है ।

3.8.1.8 **बहनोई और साले का संबंध**

' रंग दे बसन्ती चोला ' नाटक मे रतनदेवी का पति हेमराज और सरदार सोहनसिंह में बहनोई और साले का संबंध है । रतनदेवी सरदार सोहनसिंह की बहन है इसलिए हेमराज सोहनसिंह का बहनोई है और अपनी बीवी का भाई सोहनसिंह उसका साला है । दोनों में आपसी सद्‌भाव और प्यार है इसलिए कांग्रेसी कार्यकर्ता होने के बावजूद हेमराज ने क्रांतिकारी सोहनसिंह को अपने घर में पनाह दी है। उसे अपने साले की सुरक्षा की चिंता है । इसलिए वह उसे समझाता है -" आज बाहर नहीं निकलना । जगह जगह सरकार के भेड़िये घात लगाये बैठे हैं ।"[2] उन दोनों में गांधीवादी और क्रांतिकारी विचारों को लेकर बहस होती रहती है । सोहनसिंह कहता है-".. तुम तो इन्कलाब करने जा रहे हो । चरखा कातो, नारे लगाओ, हड़ताल करो, मुल्क आज़ाद हो जाएगा । इन्कलाब हो जाएगा ।"[3] हेमराज उसे पूछता है-" तुम ने कौन–सा इन्कलाब कर लिया है ? हम तो चरखा कातते है,हड़तालें करते हैं, पर तुमने बम बनाकर कौन–सा अंग्रेजों को भगा दिया है ?"[4] सोहनसिंह के मन में हेमराज के प्रति प्यार है, उसे उसकी सुरक्षा की चिंता है ।इसलिए पुल पर गोली चलने पर वह उसे ढूँढ़ने निकलता है, हालांकि पुलिस उसे ढूँढ़ रही है । रतनदेवी के रोकने पर भी वह नहीं रूकता । इस तरह भीष्म साहनी ने हेमराज और सोहनसिंह के बीच के बहनोई और साले के संबंध यथार्थ रूप में चित्रित किया है ।

3.8.2 **दोस्त–दोस्त का संबंध**

भीष्म साहनी के हानूश में नायक हानूश और बूढ़े लोहार तथा ऐमिल में दोस्ती का संबंध है गिरिजावाले घड़ी बनाने के लिए जब हानूश को वज़ीफा देने से इन्कार करते हैं तब बूढ़ा लोहार उसकी मदद करना चाहता है । वह कहता है -"...वज़ीफे का कहीं इंतजाम नहीं हुआ तो मैं लोहारों की जमात

---

1 भीष्म साहनी – रंग दे बसन्ती चोला, पृष्ठ– 28 ।

2 वही,पृष्ठ–23 ।

3 वही,पृष्ठ– 24 ।

4 वही, पृष्ठ–24 ।

से तुम्हें पैसा इकट्ठा कर के ला दूँगा ।लोहार कभी इन्कार नहीं करेंगे।तुम बेधड़क होकर अपना काम जारी रखो।"[1] बूढ़ा लोहार उसे कमानियाँ ,छड़ आदि बनाकर देता रहता है । घड़ी बंद पड़ने पर वह हानूश की सहायता करता है । ऐमिल भी हानूश का दोस्त है,जो उसका मददगार एवं शुभचिंतक है । हानूश के घर में आज चूल्हा नहीं जला है,यह जानकर वह अपने साथ यान्का को कुछ रसद देने ले जाता है । वह कहता है-"यान्का , तुम भी चलो मेरे साथ । मैं तुम्हें घर के लिए थोड़ी रसद दूँगा । वह लेती आना ।"[2] अंधे और दरबारी हानूश की मनोव्यथा जानकर वह कात्या को हानूश को लेकर तुला राज्य में चुपचाप जाने की सलाह देता है । वह सारी योजना कात्या को समझाते हुए सुनाता है-"सुनो कात्या, तुला में वह सौदागर तुम लोगों को रहने के लिए मकान देगा,हानूश को बाकायदा वज़ीफा मिलेगा और इसके साथ काम करने के लिए आदमी जुटाए जायेंगे ,सामान जुटाया जायेगा । और वह फिर से अपने काम में लग जाएगा, फिर से घड़ी बनाने लगेगा जो उसका हुनर है । हानूश अपना दु:ख भूल जाएगा ।"[3] इस प्रकार भीष्म साहनी ने ' हानूश ' नाटक के नायक हानूश और बूढ़ा लोहार तथा ऐमिल में दोस्ती के संबंध चित्रित किये है ।

'माधवी ' नाटक में भीष्म साहनी ने राजा ययाति और आश्रमवासी मारीच के बीच दोस्ती के संबंध चित्रित किये हैं । माधवी मारीच की आँखों के सामने खेलकर बड़ी हुई है । इसलिए उसके भविष्य के प्रति चिंतित हो मारीच ययाति को विश्वामित्र की अभ्यर्थना करने की सलाह देते हैं । इससे माधवी अयोध्या नरेश की पटरानी बनी रहे । वे ययाति से कहते हैं-" यदि आप ऋषि विश्वामित्र से अनुरोध करें कि वह शेष घोड़ों को आग्रह छोड़ दें,तो माधवी को कहीं ओर नहीं जाना पड़ेगा । वे आंगे समझाते हैं -"यह माधवी देवी के भावी जीवन का भी प्रश्न है महाराज, यदि ऋषि विश्वामित्र ने अपना हठ नहीं छोड़ा और गालव भी वचनबद्ध रहा तो माधवी को अयोध्या छोड़नी होगी और फिर न जाने... ।"[4] इस प्रकार मारीच अपने मित्र के बेटी के भविष्य से चिंतित होकर कोई रास्ता निकालना चाहता है । मारीच का मित्र–प्रेम श्रेष्ठ है ।

---

1 भीष्म साहनी – हानूश, पृष्ठ – 48 ।

2 वही, पृष्ठ – 54 ।

3 वही, पृष्ठ – 104 ।

4 भीष्म साहनी – माधवी, पृष्ठ – 40 ।

3.8.3 **गुरू–शिष्य–संबंध**

भीष्म साहनी के ' माधवी ' नाटक में गुरू–शिष्य संबंध चित्रित हैं । ऋषि विश्वामित्र और मुनिकुमार गालव में गुरू–शिष्य संबंध हैं ।बारह विद्याओं में पारंगत हो जाने के बाद गालव बार–बार गुरूदक्षिणा का हठ करता है,तब वे कुद्ध होकर आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों की माँग करते हैं । इसमें गालव का दोष है । गालव बताता है-"महाराज दोष मेरा ही है । गुरूदेव ने तो कहा था कि उन्हें गुरूदक्षिणा नहीं चाहिए,तुम बारह विद्याओं में पारंगत हुए हो,यही मेरी गुरूदक्षिणा है। पर महाराज,मैंने हठ किया, बार–बार आग्रह किया कि मैं तो गुरू–दक्षिणा देकर ही रहूँगा । इस पर गुरूवर कुद्ध हो उठे बोले," अच्छा ,मेरी गुरू–दक्षिणा आठ–सौ अश्वमेधी घोड़े होंगे । "[1] गुरूदक्षिणा जुटाने में असफल गालव आत्महत्या करने जा रहा था,तब गरूड़ की बातें मानकर वह ययाति के पास आ जाता है ।ययाति अपनी एकमात्र पुत्री माधवी को उसे देकर, गुरूदक्षिणा जुटाने में उसकी मदद करते हैं । विश्वामित्र ने महत्त्वाकांक्षी गालव का दंभ तोड़ने के लिए इतनी कठिन परीक्षा में उसे डाला है । वे बताते हैं- "गालव महत्त्वाकांक्षी है । मैने इसलिए उसे कठिन परीक्षा में डाला ।"[2] वे आगे स्पष्ट करते हैं- "महत्त्वाकांक्षी लोगों में यदि दंभ पाया जाये तो वह उनके विनाश का कारण बनता है ।"[3] छः सौ घोड़ो के अतिरिक्त शेष दो सौ घोड़ों के लिए माधवी जब विश्वामित्र को उनके पास अपने को रखने का प्रस्ताव रखती है तब विश्वामित्र गालव को गुरूदक्षिणा से मुक्त करते हैं । वे कहते हैं-" मैंने गुरूदक्षिणा पा ली, माधवी। मैं गालव का दंभ तोड़ना चाहता था, तुम ने मेरा दंभ तोड़ दिया ।"[4] ययाति के आश्रम में गालव का दीक्षांत समारोह का आयोजन होता है, तब ऋषि विश्वामित्र आ जाते हैं। उन्हें अपने शिष्य पर पूरा भरोसा था । वे कहते हैं-" पहले दिन से ही मुझे विश्वास था कि यह युवक एक साधारण विद्यार्थी न होकर सच्चा साधक बनेगा ।"[5] वे उसकी निष्ठा की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-" देश के कोने–कोने में भटकने पर भी गालव की एकाग्र निष्ठा में कोइ अंतर नहीं आया । किसी प्रलोभन के मोहपाश में वह नहीं फँसा ।"[6] वे उसे ऋषि गालव बनने का आशीर्वाद देते हैं । वे कहते हैं-"तुम अब हमारे शिष्य

----

1 भीष्म साहनी – माधवी, पृष्ठ – 14 ।

2 वही, पृष्ठ– 69 ।

3 वही, पृष्ठ –70 ।

4 वही, पृष्ठ – 81 ।

5 वही, पृष्ठ – 85।

6 वही, पृष्ठ– 85 ।

नहीं हो । तुम अब बारह विद्याओं में पारंगत सच्चे साधक हो । एक दिन तुम ऋषि गालव कहलाओगे।"[1] तब गालव विनम्रता से कहता है-" आप मेरे जन्म-जन्म के गुरू हैं, महाराज ।"[2] इस प्रकार भीष्म साहनी ने माधवी नाटक में ऋषि विश्वामित्र और गालव के बीच की गुरू-शिष्य संबंध स्वाभाविक रूप में चित्रित किया है ।

3.8.4 **राज-सत्ता की निरंकुशता --**

समाज में राज सत्ता का निर्माण समाज में रहनेवाले व्यक्तियों की सुरक्षा और हित संवर्धन के लिए किया जाता है । लेकिन राजसत्ता जब समाज में रहनेवाले कलाकारों की सृजनशक्ति पर प्रतिबंध लगाती है, तब कलाकार का दमन एवं शोषण के साथ हनन भी हो जाता है । इस हालत में समाज में रहनेवाले व्यक्तियों को कलाकार के सगे-संबंधियो को भी अमानवीय व्यवस्थाओं का शिकार होना पड़ता है । भीष्म साहनी की सामाजिक चेतना राजनीति के घृणित और अमानवीय व्यवहार से भली-भाँति परिचित है ।इसलिए उन्होंने ' हानूश ' और ' कबिरा खड़ा बजार में ' इन दोनों नाटकों में राजसत्ता की निरंकुशता का चित्रण किया है । 'हानूश ' नाटक में राज-सत्ता की निरंकुशता का चित्रण हुआ है । बादशाह सलामत की इज़ाजत के बगैर कोई कलाकार सृजन का कोई काम नहीं कर सकता । नगरपालिका के मीनार पर घड़ी लगवायी जाने के बाद महाराज क्रुद्ध होकर सौदागर-दस्तकारों के समक्ष अपनी इस नीति को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हुए कहते हैं-".... दस्तकार हमसे छिपाकर काम करने लगे हैं ।यह हमारी रियासत है ।यहाँ हमारा हुक्म चलता है, हमारी इज़ाजत के बिना कोई काम नहीं किया जा सकता । दस्तकार सरकश हो रहे हैं । हम इसकी इज़ाजत नहीं देंगे ।"[3] हानूश दूसरी घड़ी न बनवा सके इसलिए वे उसकी दोनों आँखे फुडवाने का आदेश देते हैं । "महाराज : (हाथ ऊँचा उठाकर) हमें नगरपालिका से कहीं ज्यादा एतबार हानूश कुफ्लसाज़ पर है ।इस आदमी को और घड़ियाँ बनाने की इज़ाजत नहीं होगी ।इस हुक्म पर अमल करवाने के लिए .... (थोड़ा ठिठककर) हानूश कुफ्लसाज़ को उसकी आँखों से महरूम कर दिया जाए ।उसकी दोनों आँखे निकाल दी जाएँ ।उसकी आँखें नहीं होगी तो और घड़िया नहीं बना सकेगा ।"[4]

---

1 भीष्म साहनी -माधवी, पृष्ठ - 86 ।

2 वही, पृष्ठ - 86 ।

3 भीष्म साहनी -हानूश, पृष्ठ - 96 ।

4 वही, पृष्ठ -95 ।

SHIVAJI UNIV... (library stamp)

जब मीनार पर लगी घड़ी बंद हो जाती है, तब उसकी मरम्मत के लिए अंधे हानूश को महाराज के कर्मचारी ,अधिकारी पकड़ ले जाते हैं । जेकब के पलायन के कारण हानूश को राजद्रोही मानकर उसे बादशाह के सामने पेश करने ले जाते हैं । अधिकारी कहता है-" हानूश कुफ़्लसाज, तुम्हारी साजिश पकड़ी गई है । तुम यहाँ से भाग जाने की साजिश कर रहे थे । इस रियासत को छोड़कर दूसरी किसी रियासत में घड़ी बनाने जा रहे थे, सरकार की मनाही के बावजूद । बादशाह सलामत के हुक्म की खिलाफवर्जी कर रहे थे ।बादशाह सलामत ने तुम्हें तलब किया है ।"[1] ये सारी बातें राज--सत्ता की निरंकुशता और पशुता प्रकट करती है ।राज--सत्ता द्वारा कलाकार पर लादा गया निर्बध और अमानुष्य व्यवहार हमारे देश में आपातकालीन निर्बंधों की याद दिलाता है । डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र लिखते हैं-"दूसरे अंक के माध्यम से साहनी जी ने सत्ता की निरंकुशता का जो परिचय दिया है,उसमें सत्ता की विरोधात्मक और विनाशात्मक शक्ती की गहरी अनुगूँज है ।इसके साथ कुछ विशिष्ट लोगों की शक्ति और सामाजिक शक्ति के संघर्ष का भी उल्लेख किया गया है । इससे लगता है कि तत्कालीन व्यवस्था और देश में लगी आपात्कालीन स्थिति ने कहीं न कहीं लेखक के अन्तर्मन को चोट जरूर पहुँचाई थी, क्योंकि इसमें व्यवस्था की कूटनीति ,क्रूरता ,स्वार्थपरता , चापलूसी और कमजोर मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है ।"[2] इस प्रकार भीष्म साहनी ने हानूश में राज--सत्ता की निरंकुशता का वास्तविक चित्रण किया है ।

भीष्म साहनी ने ' कबिरा खड़ा बजार में '' नाटक में हिन्दुस्तान के मध्ययुगीन काल के सिकंदर लोदी बादशाह का वर्णन कर राज सत्ता की निरंकुशता एवं अमानवीयता का सही चित्रण किया है । सिंकदर लोदी के सामने शेख तकी कबीर का बहुत जिक्र करते थे । इसलिए सिंकदर लोदी बिहार की फतह के बाद दिल्ली लौटते समय काशी में कबीर से मिलना चाहते हैं ।वे कबीर से जानना चाहते हैं कि जंग इबादत है या नहीं ? वे कबीर से पूछते हैं-"हम बिहार पर अपनी फतह का झण्ड़ा गाड़कर लौटे हैं, तो क्या यह छोटी--सी बात है ? क्या यह कौम की खिदमत नहीं ? दीन की खिदमत नही?"[3] कबीर निर्भीकता से जवाब देते हैं-" नहीं, यह खिदमत नहीं है । यह दीन की,खुदा की तौहीन है।"[4] सिकंदर कबीर का मजहब जानना चाहते हैं ।कबीर निर्भयता से जवाब देते है कि वे हिन्दू या मुसलमान नहीं है । उनका खुदा हर इन्सान के दिल में बसता है । वे अपनी बात को समझाते हुए कबीर गाते हैं ---

---

1 भीष्म साहनी --हानूश, पृष्ठ -- 129 ।

2 रवीन्द्रनाथ मिश्र --समीक्षाएँ : विविध आयाम, पृष्ठ-- 80 ।

3 भीष्म सहानी --कबिरा खड़ा बजार में , पृष्ठ --107--108 ।

4 वही, पृष्ठ--108 ।

"एक निरंजन अल्लाह मेरा, हिन्दू–तुर्क दुही नहीं मेरा
पूजा करूँ न नमाज गुजारूँ ,एक निराकार हिरदै नमस्कारूँ
न हज जाऊँ, न तीरथ पूजा ,एक पिछाण्यों ,तो क्या दूजा
कहै कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूँ मन लागा ।"[1]

कबीर का जवाब सुनकर, सिकंदर लोदी बादशाह गुस्से से कोतवाल को हुक्म देते हैं -" इस आदमी पर कड़ी नजर रखो और हमें इत्तला करते रहो । ऊठ फकीर ,आज के बाद कभी मुझे शिकायत मिली कि तूने दीन की तौहीन की है तो मैं तेरी टाँगे चीर दूँगा । इस आदमी को शहर से बाहर निकाल दो ।"[2] इस प्रकार भीष्म साहनी ने मध्ययुगीन हिन्दुस्तान के सिकंदर लोदी जैसे मुसलमान बादशाह का चित्रण कर राजसत्ता की निरंकुशता का चित्रण किया है ।

3.8.5 अंग्रेजी शासन व्यवस्था का चित्रण

समाज में शासन व्यवस्था की निर्मिति समाज में स्थित व्यक्तियों की रक्षा और सुख–संवर्धन के लिए की जाती है । लेकिन अंग्रेजी शासन–काल में किस तरह भारतीय लोगों के हित के खिलाफ कायदे बनाये गये,दमन–नीति का प्रयोग कर निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसायी गयी, इन सभी बातों का ब्यौरेवार वर्णन भीष्म साहनी के ' रंग दे बसन्ती चोला ' नाटक में मिलता है । नाटक के प्रारंभ में ही ईर्विंग ,माइकल ,ओ'ड्वायर , प्लोमर ,खानबहादुर और रायसाहब की एक मीटिंग होती है ,जिसमें अमृतसर में होनेवाले हड़ताल को रोकने की बात पर विचार विमर्श किया जाता है । माइकल ओं'ड्वायर कहता है-" मैं एक ही बात कहूँगा , कल यह हड़ताल नहीं होनी चाहिए । साहिबान, मैं उम्मीद करता हूँ कि आप लोग इस हड़ताल को नहीं होने देंगे ।"[3] डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारीं का विरोध करनेवाले और शांतिपूर्ण जुलूस निकालनेवाले लोगों पर इर्विंग के इशारे से गोलियाँ चलायी जाती हैं । इस गोलीकाण्ड़ से अमृतसर में बैंक की लूट, आगजनी की वारदाते होने पर मार्शल लाँ लगवाया जाता है और डायर को बुलाया जाता है।डायर जलियाँवाले बाग के जलसे में शामिल हुए निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाता है। इस सारे वर्णन से अंग्रेजी शासन व्यवस्था यथार्थ चित्रण प्राप्त है ।

---

1 भीष्म साहनी –कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ –110 ।

2 वही, पृष्ठ –110 ।

3 भीष्म साहनी –रंग दे बसन्ती चोला, पृष्ठ – 14 ।

3.8.6 **धर्म–सत्ता की दोहरी नीति पर प्रहार--**

मध्ययुगीन समाज में रहनेवाले सभी वर्ग के लोगों पर धर्म सत्ता का विशेष प्रभाव था इसलिए सामाजिक चेतना से प्रभावित होकर लिखनेवाले साहित्यकार के साहित्य में मध्ययुगीन लोंगो के जीवन का चित्रण करते समय धर्म सत्ता का चित्रण अनायास ही आ जाता है । भीष्म साहनी मार्क्सवादी विचारधारा से प्रतिबद्ध है । उन्होंने धर्म सत्ता को राज सत्ता की घृणित ,दोहरे नीतिवाले मानदंडों के साथ सहकार करते हुए दिखलाया है ।'हानूश ' और 'कबिरा खड़ा बजार में ' इन दोनों नाटकों में भीष्म साहनी ने धर्म सत्ता की दोहरी नीति पर प्रहार किया है ।धार्मिक और संत समझे जानेवाले लोगों के दोहरे चरित्र को उन्होंने 'हानूश ' नाटक में अपनी तर्कशील और विश्लेषणात्मक बुद्धि से प्रकाशित किया है । हानूश का बड़ा भाई चर्च में पादरी है ।वह नहीं चाहता कि हानूश जैसे दरिद्र वर्ग के लोग महत्त्वाकांक्षी बने । वह हानूश को नसीहत देता हुआ कहता है-".... मैं कभी ख्वाब नहीं देखता, सदा अपने को छोटा मानता हूँ, इसलिए बड़े–बड़े से ओहदों को हथिया भी लेता हूँ । मेरी क्या बिसात थी जब मैं पादरी बना था ?"[1] तथा -" तुम घड़ी बनाने का खयाल छोड़ दो । तुम अपने को घड़ीसाज मानने लगे हो, वैसे ही जैसे अपने को लाट पादरी समझने लगा था ।तुम कुफ़्लसाज़ हो और अपने को कुफ़्लसाज़ ही समझो और तुम्हारा काम कुफ्ल बनाना है ,न इससे कम, न ज्यादा ।"[2]

भीष्म साहनी ने ' कबिरा खड़ा बजार में ' नाटक में धर्म–सत्ता और शासन व्यवस्था की नीति का चित्रण किया है ।कबीर काशी में रहकर हिन्दू–मुसलमानों के बाह्याडम्बरों पर फब्तियाँ कसते हैं,उन्हें खरी–खरी सुनाते हैं । वे गली–बाजार में घूमकर कवित्त गाते हैं । मौलवी – कोतवाल तथा महंत लोग उन्हें कोड़े लगवाते हैं । नीमा उन्हें समझाती है-"कुछ सोच–समझकर बात किया कर । यह काशी है बेटा, हिन्दूओं का तीरथ है । और यहाँ का कोतवाल मुसलमान है । सभी कहते हैं ,बड़ा बेरहम आदमी है,जिंदा दफना देता है ।तू हर किसी से दुश्मनी मोल लेता फिरता है, बेटा, मेरा दिल बहुत डरता है ।"[3]

---

1 भीष्म साहनी –हानूश, पृष्ठ –39 ।

2 वही, पृष्ठ –39 ।

3 भीष्म साहनी –कबिरा खड़ा बजार में , पृष्ठ – 94 ।

कबीर अपने साथी रैदास ,पीपा से जब बातें कर रहे थे कि वे सत्संग लगायेंगे, भण्डारे का आयोजन करेंगे , तभी कोतवाल आकर अपने सिपाहियों को हुक्म देता है-" पकड़ लो उन्हें । बंद कर दो इन्हें हवालात में ।ये शहर में बदअमनी फैला रहे हैं ।"[1] इसके पहले भी अधिकारी लोगों ने धर्म के नाम पर कबीर को काफी सताया है ।स्वयं अधिकारी की यह स्वीकारोक्ति देखिए –"इस आदमी को कितना दंड दिया गया, गंगा में डुबोया गया, चमेड़ी उधेड़ी गय, मस्त हाथी के आगे फेंका गया, लेकिन इसे आँच नहीं आयी ।"[2]

हिन्दूस्तान में, मध्ययुग में मुसलमान और हिन्दू राजाओं का शासनकाल था । काशी नरेश तो हिन्दू था, पर अंमलदारी मुसलमान बादशाह सिंकदर लोदी की थी । इसलिए काशी का कोतवाल मुसलमान था । मुल्ला–मौलवी , शेखसाहब मुस्लिम धर्म के रोजा–नमाज की निंदा करतेवाले कबीर पर गुस्सा करते थे । वे कोतवाल तथा अधिकरियों से मिलकर,धर्म के नाम पर उकसाकर, कबीर को दंडित करते थे । धर्म सत्ता और शासन व्यवस्था की मिली–जुली नीति कबीर पर जुलम करती थी । इसके चित्रण से भीष्म शाहनी ने धर्म–सत्ता और शासन व्यवस्था की मिली–जुली नीति का यथार्थ चित्रण किया है ।

3.8.7 **अर्थ–सत्ता की नीति पर प्रहार**

समाज में व्यापारी ,दस्तकार आदि अर्थ–सत्ता वर्ग के लोग होते हैं । मध्ययुगीन छोटे–बड़े रियासतों में, राजाओं के अंमल में इस अर्थ सत्ता के लोग हमेशा अपनी सत्ता बनाये रखना चाहते थे । इसलिए वे धर्म सत्ता के साथ संघर्ष की राज सत्ता के सामने अपनी सत्ता प्राप्ति की नीति को काम में लाते थे । भीष्म साहनी की सजग, सामाजिक तथा मार्क्सवादी चेतना इस सत्य से भली–भाँति परिचित है ।इसलिए उन्होंने " हानूश " नाटक में अर्थ सत्ता की इस नीति का पर्दा–फाश कर, सामान्य वर्ग के हानूश का शोषण किस तरह किया जाता है , यह दर्शाया है । 'हानूश ' नाटक के दूसरे अंक के तीसरे दृश्य में नगरपालिका के सदस्य मिलकर हानूश की घड़ी नगरपालिका के मीनार पर लगाने की तथा और घड़ीयाँ निर्माण करने की कला को व्यवसाय बनाकर उससे लाभान्वित होने की सोचते हैं ।हुसाक सब को अपनी योजना समझाते हुए कहता है-" सब से पहले मैं महाराज का स्वागत करूँगा । इसके बाद महसूल चुंगी का मसला टाबर पेश करेगा ।टाबर अपनी दरख्वास्त आगे बढकर पेश करेगा । यह दूसरी दरख्वास्त दरबार में हम दस्तकारों की नुमाइन्दगी से ताल्लुक रखती है । यह दरख्वास्त शेवचेक पेश करेगा । आखिर में हानूश कुफ़्लसाज़ पेश होगा ।"[3]

1 भीष्म साहनी – कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ – 96 ।
2 वही, पृष्ठ – 96 ।
3 भीष्म साहनी – हानूश, पृष्ठ – 89 ।

महाराज के आने पर हुसाक हानूश कुफ़्लसाज़ द्वारा और घड़ियाँ बनवाकर, दूसरे देशों में बेचने की अपनी योजना पेश करते हुए कहता है-" हुजूर आपकी मेहरबानी से नगर में घड़ीसाजों की एक जमात भी बन सकती है । हम घड़ियाँ बना बनाकर दिसावर में भी भेज सकते हैं ।"[1]

देश में पहली घड़ी बनी है इसलिए उसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। व्यापारी चाहते हैं कि बादशाह के सामने महसूल चुंगी बढ़ाने की माँग करें । इस काम के लिए सर्वप्रथम वे बादशाह सलामत के आगे दाखले की चुंगी बढाने की माँग रखने की सोचते हैं । चर्च द्वारा हानूश को वजीफा बंद किये जाने पर पिछले पाँच वर्षों से नगरपालिका ने हानूश को वजीफा दिया है । इसलिए नगरपालिका के लोग की घड़ी पर अपना हक गिरिजावालों से ज्यादा मानते हैं । इस अधिकार को बनाये रखने के लिए घड़ी को नगरपालिका के मीनार पर लगवाकर ,बादशाह को आमंत्रित कर, अपनी माँगे बादशाह के सामने रखते हैं । लेकिन बादशाह नहीं चाहते कि व्यापारी वर्ग के लोग उनके सिर पर सवार हो । इसे वे अपनी तौहीन समझकर सामान्य वर्ग के हानूश को दंड़ित करते हैं । बेचारा हानूश अर्थसत्ता और राजसत्ता के बीच पीसकर अपनी दोनों आँखें खो बैठता है । इस प्रकार हम देखते हैं कि अर्थ सत्ता की नीति के कारण सामान्य लोग कुचले जाते हैं । भीष्म साहनी ने हानूश नाटक के जरिए अर्थ सत्ता जिनके हाथों में हैं ऐसे लोगों का यथार्थ चित्रण किया है।

3.8.8 **विवाह प्रथा का चित्रण--**

समाज में विवाह-प्रथा का अपना खास महत्त्व होता है । हर एक समाज में विवाह-प्रथा के अलग अलग नियम होते हैं । भीष्म साहनी ने 'माधवी ' और 'मुआवज़े ' नाटक में विवाह प्रथा का चित्रण किया है । ' माधवी ' नामक पौराणिक नाटक में विवाह की तत्कालीन स्वयंवर प्रथा 'का वर्णन आया है । माधवी के जरिए गुरूदक्षिणा जुटाने में गालव की सफलता के बाद माधवी मुक्त हो जाती है तब ययाति अपनी पुत्री माधवी का स्वयंवर अपने आश्रम मे रचाते है । स्वयंवर प्रथा में युवति को अपना मनचाहा पति चुनने का स्वातंत्र्य होता है । ययाति विश्वामित्र से कहते हैं-" महाराज, मैंने इसलिए स्वयंवर का आयोजन किया है कि माधवी स्वयं अपना वर चुन ले।"[2]

---

2 भीष्म साहनी - माधवी, पृष्ठ - 87 ।

स्वयंवर . में भाग लेने के लिए अनेक राजा आते हैं । आश्रमवासियों का कथन देखिए – "दसियों राजा–महाराजा स्वयंवर में भाग लेने आये हैं । राजाओं का ठाठ देखा ।"[1]

भीष्म साहनी ने मुआवजे नाटक में विवाह को किस प्रकार एक सौदे का रूप दिया जाता है ,इसका काल्पनिक परंतु यथार्थ लगनेवाला चित्र खींचा है ।बाप बेटी को एक बोझ मानता है।अपनी बेटी का विवाह करवाकर बाप अपना बोझ कम करना चाहता है । "बुजुर्ग- 1 अगर इसे मर जाना है तो बेशक मेरी बेटी के साथ कर दो । ....मेरा बोझ भी हल्का हो ।"[2] बेटी की शादी में मर्द लोग अपनी घरवाली की राय लेना या उसे बताना तक वे जरूरी नहीं मानते । " सुथरा बुजुर्ग से पूछता है –"बाबा, तुम अपनी घरवाली से तो पूछ लो । बुजुर्ग 1 जवाब देता है –"उससे पूछने की जरूरत नहीं । औरतों को बता दो तो कोई काम पूरा नहीं होता ।"[3] बुजुर्ग अपनी बेटी की शादी लँगड़े दीनू रिक्शावाले के साथ पैसे की खातिर कर रहा है । दंगे में दीनू मारा जाएगा , तब मुआवजे के दस हजार रूपये मिलेंगे । इसलिए सुथरा आगाह करता है कि तेरी बेटी विधवा हो जाएगी । जीवन जवाब देता है कि पर लड़की को पैसे तो मिलेंगे ,मुआवजा तो मिलेगा । पैसे की खातिर दूसरा भी एक बुजुर्ग अपनी बेटी की शादी दीनू से करवाने आता है । वह कहता है-" लो नी, अभी लावाँ फेरे कर दो । पर पहले यह बात पक्की हो जाये कि दीनू मरेगा । "[4] सुथरा मशवरा देता है कि दोनों लड़कियों के साथ दीनू की शादी कर दो । दीनू के मरने पर आधा–आधा मुआवज़ा दोनों लड़कियाँ बाँट लेंगी । दीनू शांति के साथ अपनी शादी करना चाहता है ।चौधरी शांति के बाप से पूछता है –"इसने पहले से ही चुन रखी है । अबे, कहाँ नजरें लड़ा रहे हो ?.... कहाँ है शांति का बाप ? बुजुर्ग –3 जवाब देता है – मैं तैयार हूँ, पर बाद में यह न मरा तो मेरी बेटी एक लँगड़े के साथ बँधी रहेगी।"[5]

झुग्गी – झोंपड़ी में रहनेवाली स्त्रियाँ अपने पति की मौत हो जाने पर दुबारा शादी रचाती हैं । इसका उल्लेख सुथरे के इस कथन से होता है । सुथरा बताता है-"कुछ मुद्दत पहले एक जगह दंगा हुआ । हीरा रंगसाज मारा गया । उसकी घरवाली को दस हजार रूपए मिल गये । अब चायपानी की दुकान करती है, दूसरा खसम करने की सोच रही है ।"[6]

---

1 भीष्म साहनी – माधवी, पृष्ठ – 83 ।
2 भीष्म साहनी –मुआवज़े ,पृष्ठ – 54 ।
3 वही, पृष्ठ – 54 ।
4 वही, पृष्ठ – 54 ।
5 वही, पृष्ठ – 55 ।
6 वही, पृष्ठ – 51 ।

SHIVAJI UNI LIBRARY KOLHAPUR

पैसे की खातिर शांति का बाप शांति की तीन बार शादी रचाने को तैयार है ।बाप बेटी के निम्न सवाल–जबाब देखिए –

"बुजुर्ग 3: सरकार से पैसे बसूल कर पाने के लिए। पैसे मिल जायेंगे तो तेरा ब्याह किसी अच्छी जगह कर देंगे ।

शांति : अगर वह भी मारा गया तो ?

बुजुर्ग 3 : तो वहाँ से भी पैसे लेकर उससे की अच्छी जगह पर कर देंगे ।

शांति : –तो क्या मैं तीन–तीन बार विधवा होऊँगी ?

बुजुर्ग 3 : नहीं पगली, तू तीन बार सुहागन होगी और तीस हजार अलग ।"[1]

इस प्रकार भीष्म साहनी ने " मुआवज़े " में पैसे की खातिर किस तरह शादी की रचायी जाती है उसका काल्पनिक परतु यथार्थ–सा लगनेवाला आकर्षक चित्र खींचा है ।

3.8.9. जाति–व्यवस्था और छुआछूत की प्रथा

हिन्दू समाज की एक प्रमुख विशेषता है उसमें स्थित जाति–व्यवस्था और छुआछूत की प्रथा । हिन्दुओं के चार प्रमुख वर्ण–ब्राह्मण ,क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र से बनी चार प्रमुख जातियां मानी गयी है । इनमें से हर एक जाति की अनेक उपजातियाँ हैं। इस जाति–व्यवस्था का और छुआछूत की प्रथा का चित्रण भीष्म साहनी ने ' कबिरा खड़ा बजार में ' किया है । ब्राह्मणों की उपजातियों के संबंध में कायस्थ कोतवाल को बताता है –"बहुत है मालिक ,ब्राह्मणों की ही 108 जातियाँ हैं । एक एक जाति की फिर उपजात हैं, हजारों जातें हैं ।"[2] उच्च जाति के लोग ' शूद्र ' और ' नीची ' समझी जानेवाली जातियों से संबंधित लोगों को उन्हें अछूत मानकर उनसे कोसों दूर रहना पसंद किया करते हैं । ब्राह्मण ,क्षत्रिय और वेश्य जाति के लोग 'शूद्र ' को अछूत मानते हैं । छुआछूत की प्रथा के कारण शूद्र तथा निम्न जातियों के लोगों को अपवित्र मानकर, ब्राह्मण ,क्षत्रिय और वेश्य जाति के लोग उनका स्पर्श तथा छाया अपवित्र मानते हैं । मठ के महंत और साधु की सवारी जाते समय नीची जाति के लोगों का साया पड़ना भी अशुभ और अपवित्र माना जाता है । ' कबिरा खड़ा बजार में ' जब महंत की पालकी निकलती है तब एक जटाधारी साधु हाथ में चाबुक लिए रहता है । इसका कारण बताते हुए कायस्थ कोतवाल से कहता है " यह नीच जात के लोगों को रास्ते पर से हटाने के लिए मालिक । झाँकी पर किसी कमीन का साया नहीं पड़ना चाहिए ।"[3] उस समय रास्ते पर पानी छिड़कने की वजह बताते हुए कायस्थ कहता है -"नहीं मालिक, यह गंगाजल छिड़क रहा है ।

---

1 भीष्म साहनी – मुआवज़े ,पृष्ठ – 56 ।
2 भीष्म साहनी –कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ – 30 ।
3 वही, पृष्ठ – 32 ।

रास्ते को पवित्र करने के लिए गंगाजल के थोड़े-से छींटे भी बहुत हैं ।"[1] महंत की सवारी निकलते समय एक चाण्ड़ाल का बेटा सामने आ जाता है , तो उसे साधू चाबुक से मार-मारकर अधमरा करते हैं । कबीर के बीच में कूदने के कारण लड़का बच जाता है । कबीर उस से मुलाकात होने पर पूछते हैं-".... हम नहीं आये होते तो आपने तो उस बच्चे को ठिकाने लगा दिया था । कहाँ से मिली इतनी बड़ी चाबुक महाराज, भगवान के नाम पर चाबुक चलाते हो ?"[2] कबीर के ऐसा प्रश्न पूछने पर साधु उत्तर देता है-"वह कमीनजात लौंड़ा , चाण्ड़ाल का बेटा । जानता नहीं था, महाराज की सवारी आ रही है ? "[3] मंदिर तथा मठ की मूर्तियाँ मुसलमान कारागीर बनाते हैं । उन पर गंगाजल छिड़ककर उन्हें पवित्र कर लिया जाता है । इसके बारे में कोतवाल और कायस्थ में प्रश्नोत्तर होते हैं। देखिए --

"कोतवाल : मैंने सुना है कि मंदिर की मूर्तियाँ तो मुसलमान कारागीर बनाते हैं ।

कायस्थ : जी। पर स्थापित करने से पहले उन पर गंगाजल छिड़ककर उन्हें पवित्र कर लिया जाता है । प्राण-प्रतिष्ठा तो बाद में होती है ।प्राण-प्रतिष्ठा के बाद मूर्ति देवता बन जाती है , उसके पहले तो पत्थर है ।"[4]

छुआछूत की प्रथा के कारण ही मठ के महंत कोतवाल से मिलकर, मठ के सामने की जमीन पर की सूदर लोगों की बस्ती को हटाना चाहते हैं । महंत और कोतवाल के बीच के सवाल-जवाब देखिए --

"महंत : मठ की जमीन तो हमारे नाम हो गयी । शीघ्र ही वहाँ इमारत भी खड़ी होने लगेगी और तो सब ठीक है, लेकिन मठ की जमीन के ऐन सामने ....

कोतवाल : हाँ,हाँ कहिए ।

महंत : ऐन सामने नीच लोगों की बस्ती है ।आप तो जानते हैं,हमारे धर्म में ऊँच नीच का बहुत ध्यान रखा जाता है ।

कोतवाल : तो आप क्या चाहते हैं ? वे लोग कौन है ? सूदर है ? (हँस देता है)। "[5]

---

1 भीष्म साहनी - कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ - 32 ।

2 वही, पृष्ठ -70 ।

3 वही, पृष्ठ - 70 ।

4 वही, पृष्ठ -31-32 ।

महंत : सूदर ही समझिये । डोम–चमार हैं ।

कोतवाल : तो आप क्या चाहते हैं ? उन्हें वहाँ से हटा दिया जाये ?

महंत : हुजुर ।"[1]

हिन्दू धर्म में नीची जाति के लोगों को पवित्र धर्मग्रंथ जैसे– वेद – पुराण आदि पढ़ने का अधिकार नहीं है । उनके स्पर्श से ही ये पवित्र धर्मग्रंथ अपवित्र हो जाते हैं, ऐसी धारणा है । कबीर कहते हैं-" महाराज , नीच जात का आदमी वेद कहाँ पढ़ सकता है । वह तो उसे हाथ भी नहीं लगा सकता । उसके तो छूने से ही वेद – पुराण भ्रष्ट हो जाते हैं ।"[2] इस प्रकार भीष्म साहनी ने ' कबिरा खड़ा बजार में ' नाटक में हिन्दुओं की जाति–व्यवस्था और छुआछूत की प्रथा का चित्रण भी किया है ।

3.8.10 सामान्य कलाकार की विजय–घोषणा

समाज में राज–सत्ता, अर्थ–सत्ता और धर्म–सत्ता वर्ग के लोग अपनी सत्ता के बल पर सामान्य वर्ग के लोगों पर अनेक जुल्म ढाते हैं । 'हानूश ' नाटक में, नाटक का नायक हानूश एक मामूली कुफ्लसाज़ है,तो इन तीनों सत्ता वर्ग के हाथों पीसा जाता है । लेकिन नाटक के अंत में, घड़ी बनाने की कला में सहायक जेकब देश छोड़कर भाग जाने में सफल हो जाता है । नाटक के तीसरे अंक के द्वितीय दृश्य में हानूश पर देश-द्रोह का आरोप लगाकर अधिकारी, राजसत्ता के प्रमुख बादशाह के सामने पकड़कर ले जाते समय हानूश को संतोष है कि उसकी कला को जीवित रखने के लिए जेकब देश के बाहर चला गया है । "हानूश - (ठिठक जाता है, फिर बड़ी आश्वस्त आवाज में) महाराज का हुक्म सिर–आँखों पर । मैं हाजिर हूँ ।.... घड़ी बन सकती है, घड़ी बंद भी हो सकती है । घड़ी बनानेवाला अंधा भी हो सकता है, मर भी सकता है । लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। जेकब चला गया ताकि घड़ी का भेद जिंदा रह सके और यही सब से बड़ी बात है ।"[3] भीष्म साहनी मार्क्सवादी विचारधारा के साहित्यकार हैं, अतः उन्होंने सामान्य कलाकार की

---

1 भीष्म साहनी – कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ – 37 ।

2 वही, पृष्ठ – 71 ।

3 भीष्म साहनी – हानूश, पृष्ठ – 129 ।

विजय–घोषणा की है । इस सबंध में डॉ. सत्यवती त्रिपाठी का कहना है-" हानूश एक मामूली कुफ़्लसाज़ या ताला बनानेवाला होते हुए भी सारे देश को आधुनिकीकरण और विकास का अग्रदूत बनता है जो नाटककार की प्रगतिशील विचारधारा के अनुरूप है ।.....सामान्य मनुष्य की अपार शक्ति और विजय यात्रा की भी गहन सांकेतिक अभिव्यक्ति हिंदी नाटक की एक उपलब्धि है । प्रगतिशील विचारधारा के जीवन मूल्यों को नाटककार ने इसके द्वारा सजीव रूप में उपस्थित किया है नाटक की वस्तु से केन्द्रीय अभिप्राय यही ध्वनित होता है कि हानूश जैसा एक मामूली मजदूर बहुत बड़ा काम कर सकता है, प्रतिभा किसी अभिजात वर्ग की बपौती नहीं है ।यही मामूली आदमी अकेला और निहत्था होते हुए भी सत्ता के आगे चुनौती बनकर खड़ा हो जाता है । सत्ता उसे समाप्त कर सकती है, उसके काम, शिल्प–साधना के परिणाम तथा संघर्ष को नहीं । इस सारे सोच को भीष्म जी ने हानूश के चरित्र के द्वारा मार्मिक रूप में साकार किया है ।"[1] इस तरह भीष्म साहनी की सामाजिक चेतना के कारण हानूश में सामान्य कलाकार की विजय–घोषणा हुई है ।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी के नाटकों में स्थान–स्थान पर सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं । उनके नाटकों में सामाजिक चेतना के कारण पारिवारिक संबंधों का यथार्थ और मानवीय चित्रण प्राप्त होता है . उनके 'हानूश ' नाटक में हानूश और उसकी पत्नी कात्या के बीच के झगडो के साथ ही कोमल और आंतरिक प्रेमभावना का मनोहारी चित्रण प्राप्त होता है । ' कबिरा खड़ा बजार में ' कबीर और लोई के बीच के पति–पत्नी संबंध यथार्थ की ठोस नींव पर खड़े हो जाते हैं । ' माधवी ' नाटक में माधवी और उसके तीन राजाओं के साथ के पति–पत्नी संबंध एक सौदा–स्वरूप तय होते हैं ,जो बनकर फिर टूट जाते हैं. । ' मुआवजे ' की शांति का पत्नी का रिश्ता दीनू के साथ पैसों के लिए तय किया जाता है जो अतिरंजित और काल्पनिक लग सकता है लेकिन बाद में शांति धीरे–धीरे दीनू से प्यार करती है ।दीनू और शांति के बीच का पति–पत्नी संबंध मानवीय रूप धारण कर स्थायी रूप ग्रहण करता है । ' रंग दे बसन्ती चोला ' में रतनदेवी जलियाँवाले बाग के गोलीकाण्ड में मारे गये अपने पति हेमराज की मृत्यु पर आँसू बहाना नहीं चाहती । वह खुद को चिर–सुहागन मानती है । इस प्रकार भीष्म साहनी ने अपने पाँचों नाटकों में सामाजिक चेतना के कारण पति–पत्नी संबंधों का यथार्थ चित्रण किया है ।

---

1 डॉ. सत्यवती त्रिपाठी – आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रयोगधर्मिता , पृष्ठ – 154–155।

भीष्म साहनी ने पारिवारिक संबंधों का चित्रण करते समय ' हानूश ' में माँ–बेटी और पिता–पुत्री के स्नेहपूर्ण संबंधों पर रोशनी डाली है । ' माधवी ' नाटक के राजा ययाति और उसकी बेटी माधवी के पिता–पुत्री के संबंध कर्तव्य और निष्ठा की तीखी धार पर चलते हैं और माधवी को दु:खी बनाते हैं । 'कबिरा खड़ा बजार में ' नाटक में भीष्म साहनी ने नूरा–कबीर और नीमा–कबीर के क्रमशः पिता–पुत्र और माता–पुत्र के स्नेहभरे संबंधों का ह्दयस्पर्शी चित्रण किया है । नाटककार ने " हानूश " में पादरी और हानूश के भाई–भाई संबंधों का चित्रण कर भाई–भाई के आपसी प्यार और सद्भावना का चित्रण किया है । ' रंग दे बसन्ती चोला ' में नाटककार ने रतनदेवी और सोहनसिंह के बहन–भाई के संबंधों का चित्रण हुआ है । ' रंग दे बसन्ती चोला ' में हेमराज और सोहनसिंह के बहनोई – साले का संबंध यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है ।इस प्रकार भीष्म साहनी ने पारिवारिक संबंधों का यथार्थ चित्रण किया है ।

समाज में रहनेवाले व्यक्ति के संबंध केवल पारिवारिक नहीं होते । अपने परिवार में स्थित व्यक्तियों को छोड़ ,अन्य व्यक्तियों के साथ भी व्यक्ति के सामाजिक संबंध होते हैं । दोस्त – दोस्त संबंध और गुरू–शिष्य संबंध सामाजिक संबंध ही कहलाते हैं । इन संबंधों का चित्रण भी नाटककार ने क्रमशः ' हानूश ' और ' माधवी ' में किया है ।

समाज में स्थित व्यक्ति के जीवन पर राज–सत्ता ,धर्म–सत्ता और शासन व्यवस्था का प्रभाव पड़ता है । नाटककार भीष्म साहनी ने सामाजिक चेतना के कारण इन सब बातों का चित्रण किया है । उन्होंने राज–सत्ता की निरंकुशता का चित्रण ' हानूश ' और ' कबिरा खड़ा बजार में ' कर राज–सत्ता की निर्ममता और स्वार्थपरता को उजागर किया है ।। उन्होंने ' हानूश ' नाटक में पादरी के माध्यम से धर्म–सत्ता की दोहरी नीति का भाण्ड़ा फोड़ा है । उन्होंने ' रंग दे बसन्ती चोला ' नाटक में अंग्रेजी शासन–व्यवस्था की क्रूरता और अमानवीयता का यथार्थ चित्रण किया है । उन्होंने ' हानूश ' नाटक में व्यापारी वर्ग के जरिए अर्थ–सत्ता की नीति को रूपायित किया है । समाज में विवाह–प्रथा अपना विशेष महत्त्व रखती है । नाटककार ने ' माधवी ' और 'मुआवज़े ' में विवाह प्रथा का वर्णनं किया है । उन्होंने हिन्दू समाज की जाति–व्यवस्था और छुआछूत की प्रथा का सही और यथार्थ चित्रण ' कबिरा खड़ा बजार में ' किया है । निष्कर्षतः भीष्म साहनी एक सजग सामाजिक चेतना से अनुप्राणित होकर लिखनेवाले नाटककार के रूप में हमारे सामने आते हैं।